मार्गशीर्ष शुक्ल - 4 ■ संवत 2081 ■ वर्ष - 12 ■ अंक - 130 ■ पृष्ठ - 8 ■ रु. 5/- चेन्नई » गुरुवार » 05-12-2024 ■ www.dakshinbharat.com ■ Email : chennai@dakshinbharat.com

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

தக்ஷின் பாரத் ராஷ்ட்ரமத் | தினசரி ஹிந்தி நாளிதழ் | चेन्नई और बेंगलूरु से एक साथ प्रकाशित

5 भाजपा ने संविधान की धज्जियां उड़ाईं, उपासना स्थल कानून को तार-तार किया : खरगे

6 वाहनों की पार्किंग के संकट से जूझते शहर

7 'ये रिश्ता या कहलाता है' में आएगा नया ट्विस्ट : समृद्धि शुक्ला

फर्स्ट टेक

कुवैत के साथ गहरे संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है भारत : मोदी

नई दिल्ली/भाषा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को कहा कि भारत अपने लोगों और क्षेत्र के लाभ के लिए कुवैत के साथ अपने गहरे और ऐतिहासिक संबंधों को और मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कुवैत के विदेश मंत्री अब्दुल्ला अली अल-याहया की अगवानी के बाद सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा, ''कुवैत के विदेश मंत्री अब्दुल्ला अली अल याहया का स्वागत करके प्रसन्न हूं। मैं भारतीय नागरिकों के कल्याण के लिए कुवैती नेतृत्व को धन्यवाद देता हूं। उन्होंने कहा, भारत हमारे लोगों और क्षेत्र के लाभ के लिए हमारे गहरे और ऐतिहासिक संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

'यूनाइटेड हेल्थकेयर' के सीईओ की न्यूयॉर्क के होटल के बाहर गोली मारकर हत्या

न्यूयॉर्क/एपी। 'यूनाइटेड हेल्थकेयर' के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) ब्रायन थॉम्पसन की बुधवार सुबह मैनहट्टन शहर स्थित एक होटल के बाहर गोली मारकर हत्या कर दी गई। मामले की जांच से जुड़े एक अधिकारी ने नाम का उल्लेख नहीं करने की शर्त पर यह जानकारी दी। वहीं, पुलिस ने मृतक की पहचान सार्वजनिक किए बिना बताया कि 50 वर्षीय व्यक्ति को हिल्टन के बाहर सुबह करीब 6:45 बजे गोली मारी गई, उसके बाद हमलावर फरार हो गया। पुलिस ने कहा कि घायल को नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उसे बचाया नहीं जा सका।

अखाड़ा परिषद की धर्म संसद में होगी सनातन बोर्ड के गठन पर चर्चा

प्रयागराज/भाषा। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में अगले वर्ष आयोजित होने वाले महाकुम्भ मेले में 27 जनवरी को अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद एक धर्म संसद का आयोजन करेगी, जिसमें साधु संतों के बीच सनातन बोर्ड के गठन पर चर्चा की जाएगी। आह्वान अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर अवधूत बाबा अरुण गिरि जी महाराज ने यहां मेला क्षेत्र में संवाददाताओं से कहा, इस धर्म संसद में सभी 13 अखाड़ों के साधू संत, पीठाधीश्वर, महामंडलेश्वर आदि शामिल होंगे और इस बात पर चर्चा होगी कि सनातन बोर्ड में क्या होना चाहिए और क्या नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा, सनातन बोर्ड के लिए नियम कानून संत महात्मा ही तय करें और इस बोर्ड में सभी 13 अखाड़ों के महापुरुष पदाधिकारी हों। इस धर्म संसद में इस बात पर चर्चा होगी कि सनातन बोर्ड का बाइलाज कैसे बनाया जाए।

05-12-2024 सूर्यास्त 5:41 बजे | 06-12-2024 सूर्योदय 6:18 बजे

BSE	NSE
80,956.33 (+110.58)	24,467.45 (+10.30)

सोना	चांदी
7,981 रु. (24 कैरेट) प्रति ग्राम	98,000 रु. प्रति किलो

मिशन मंडेला
दक्षिण भारत राष्ट्रमत
दक्षिण भारत का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक
epaper.dakshinbharat.com

कैलाश मण्डेला, मो. 9828233434

जाहिल लोगों

ये ताज महल उड़वा देंगे,
हैं कौन लोग कुछ बोलो तो।
संसद तक पर हमला करते,
हैं क्या मकसद यह खोलो तो।
आखिर किसका यह देश कहो,
कथनी करनी को तोलो तो।
जाहिल लोगों कुछ पल को ही,
अपनी औकात टटोलो तो।

स्वर्ण मंदिर के बाहर

बाल-बाल बचे सुखबीर बादल

गोली चलाने का आरोपी पूर्व खालिस्तानी आतंकवादी गिरफ्तार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

अमृतसर/भाषा। पंजाब के अमृतसर में स्वर्ण मंदिर के बाहर बुधवार को शिरोमणि अकाली दल (शिअद) के प्रमुख सुखबीर सिंह बादल पर एक पूर्व खालिस्तानी आतंकवादी ने गोली चलाई, लेकिन वहां सादा कपड़ों में मौजूद एक पुलिसकर्मी द्वारा आरोपी को पकड़ लिए जाने से उसका निशाना चूक गया और बादल बाल-बाल बच गए।

पंजाब में शिअद सरकार द्वारा 2007 से 2017 तक की गई ''गलतियों'' के लिए स्वर्ण मंदिर में 'सेवादार' के रूप में बादल की सजा का यह दूसरा दिन था, जिसे 'कवर' करने पहुंचे मीडियाकर्मियों के कैमरे में हमले का पूरा दृश्य 'रिकॉर्ड' हो गया। गोली चलाने वाले की पहचान पूर्व आतंकवादी नारायण सिंह चौरा के रूप में हुई है। घटना की प्रसारित तस्वीरों में दिखता है कि आरोपी धीरे-धीरे बादल (62) की ओर बढ़ा और अपनी जेब से हथियार निकाला।

बादल को 'जेड प्लस' श्रेणी की सुरक्षा प्राप्त है और पैर में 'फ्रैक्चर' के कारण वह व्हीलचेयर पर बैठकर सजा के रूप में अपनी सेवा कर रहे थे।

चौरा (68) को मंगलवार को भी स्वर्ण मंदिर में देखा गया था।

सादा कपड़ों में बादल के पास खड़े सहायक उपनिरीक्षक (एएसआई) जसबीर सिंह ने वरिष्ठ अकाली नेता पर खतरे को भांप लिया और हमलावर पर झपट पड़े तथा उसका हाथ पकड़कर ऊपर की ओर धकेल दिया।

भारत एक मजबूत समुद्री राष्ट्र, समुद्र ही हमारा भाग्य, गौरव और पहचान : मुर्मु

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/एजेन्सी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा है कि भौगोलिक स्थिति ने भारत को महान समुद्री राष्ट्र बनने के लिए ज़रूरी सभी तत्व प्रदान किए हैं और वह आश्वस्त हैं कि भारतीय नौसेना विकसित राष्ट्र के निर्माण के लिए ज़रूरी इन तत्वों की सुरक्षा करती रहेगी।

श्रीमती मुर्मु ने बुधवार को ओडिशा के पुरी तट पर आयोजित नौसेना दिवस समारोह में भाग लिया और वह नौसैनिकों के साहस, ताकत तथा कौशल का प्रदर्शन करने वाले विभिन्न अभियानों की गवाह बनी।

राष्ट्रपति ने नौसेना दिवस के अवसर पर नौसेनाकर्मियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा, आज 04 दिसंबर को, हम 1971 के युद्ध में अपनी शानदार जीत का जश्न मनाते हैं और मातृभूमि की रक्षा में नौसेना कर्मियों द्वारा की गई निस्वार्थ सेवा और सर्वोच्च बलिदान को याद करते हैं। देश भारतीय नौसेना के सभी कर्मियों का आभारी है और प्रत्येक भारतीय सम्मान और साहस के साथ राष्ट्र की सेवा करने के लिए उन्हें सलाम करता है।

श्रीमती मुर्मु ने कहा कि भारत की भौगोलिक स्थिति ने उसे महान समुद्री राष्ट्र बनने के लिए ज़रूरी सभी तत्व प्रदान किए हैं। लंबी तटरेखा, द्वीप क्षेत्र, समुद्री यात्रा करने वाली आबादी और विकसित समुद्री बुनियादी ढांचे ने 5,000 साल से भी अधिक पहले से तट और महासागरों के पार भारत की समुद्री गतिविधियों को बढ़ावा दिया है। उन्होंने कहा कि गौरवशाली समुद्री विरासत और पीछे मुड़कर देखने लायक इतिहास तथा उम्मीदों से भरे भविष्य के साथ, भारत हमेशा से एक मजबूत समुद्री राष्ट्र रहा है - हमारा भाग्य ,गौरव और पहचान समुद्रों द्वारा ही परिभाषित होती है। उन्होंने विश्वास जताया कि भारतीय नौसेना 2047 तक एक विकसित भारत के निर्माण के लिए ज़रूरी, समुद्री सुरक्षा को सुनिश्चित करना जारी रखेगी।

राष्ट्रपति ने 'नारी शक्ति' को उचित विकास के अवसर प्रदान करने में नौसेना के अग्रणी प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि नौसेना, महिला अग्निवीरों को शामिल करने वाली पहली सेवा थी। उन्होंने कहा कि 'नाविका सागर परिक्रमा दो' के हिस्से के रूप में आईएनएसवी तारिणी में विश्व की परिक्रमा करने वाली दो महिला नौसेना अधिकारी, लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना के और लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा, इस नए बदलाव का सबसे अच्छा उदाहरण हैं।

आयुर्वेद में सघन अनुसंधान का राष्ट्रपति का आह्वान

पुरी (ओडिशा)/भाषा। **राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार** को आयुर्वेद में कई रोगों का इलाज मौजूद होने को रेखांकित करते हुए उसमें सघन अनुसंधान की जरूरत पर बल दिया। यहां गोपबंधु आयुर्वेद महाविद्यालय के 75 वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए मुर्मू ने कहा कि योग और प्रकृति से जुड़े रहकर व्यक्ति आजीवन रोगमुक्त रह सकता है। राष्ट्रपति ने आयुर्वेद के विद्यार्थियों से अनुसंधान करने का आह्वान करते हुए कहा,''अनुसंधान किसी भी प्रद्धति को वैज्ञानिक आधार देने में सक्षम है। सबूत से लोगों में विश्वास का वातावरण बनता है और इसी विश्वास से स्वीकार्यता के मार्ग में विस्तार होता है।'' उन्हें कुछ खास रोगों के उपचार के लिए आदिवासियों के बीच प्रचलित उपचार पद्धति के बारे में पता है।

अदाणी डिफेंस ने नौसेना को दूसरा दृष्टि-10 ड्रोन सौंपा

नई दिल्ली/भाषा। अदाणी डिफेंस एंड एयरोस्पेस ने भारतीय नौसेना को दूसरा दृष्टि-10 स्टारलाइनर निगरानी ड्रोन सौंप दिया है। इससे समुद्री क्षेत्रों में निगरानी करने और समुद्री लुटेरों के जोखिम को कम करने के लिए भारत की समुद्री सेना की क्षमता बढ़ेगी। मामले से अवगत सूत्रों ने बताया कि इस वर्ष की शुरुआत में भारतीय नौसेना को पहला दृष्टि-10 सौंपे जाने के बाद दूसरे मानवरहित हवाई वाहन (यूएवी) को नौसेना के समुद्री अभियानों में शामिल करने की प्रक्रिया गुजरात के पोरबंदर में शुरू की गई। यह इजराइल के ड्रोन हर्मीस 900 मध्यम ऊंचाई वाले लंबे समय तक उड़ान भरने वाले यूएवी का एक संस्करण है।

उद्योगपति गौतम अदाणी के स्वामित्व वाले समूह की कंपनी अदाणी डिफेंस एंड एयरोस्पेस द्वारा हैदराबाद स्थित संयंत्र में बनाया गया दृष्टि 10 स्टारलाइनर ड्रोन एक उन्नत खुफिया, निगरानी तथा टोही (आईएसआर) उपकरण है, जिसमें 36 घंटे चलने और 450 किलोग्राम पेलोड की क्षमता है।

देवेंद्र फडनवीस आज लेंगे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पद की शपथ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

फडनवीस को भाजपा के केन्द्रीय पर्यवेक्षक श्रीमती सीतारमण और रूपाणी की निगरानी में पार्टी विधायक दल की बैठक में सर्वसम्मति से नेता चुना गया।

मुंबई/एजेन्सी। महाराष्ट्र शासन की बागडोर एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र सरिता गंगाधरराव फडनवीस के हाथ में सौंपने की तैयारी पूरी हो चुकी है। शपथग्रहण समारोह यहां ऐतिहासिक आजाद मैदान में होगा।

राज्य के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन फडनवीस को गुरुवार शाम को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाएंगे। फडनवीस का यह मुख्यमंत्री पद के लिए तीसरा शपथ-ग्रहण होगा, लेकिन यह उनकी वास्तविक अर्थों में पूर्ण बहुमत वाली दूसरी सरकार होगी। वह पहली बार 2014-19 तक मुख्यमंत्री रहे। वर्ष 2019 के विधानसभा चुनावों के बाद तत्कालीन राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने उन्हें आनन-फानन में मुख्यमंत्री की शपथ दिलाई थी पर विधानसभा सदस्यों का पर्याप्त समर्थन न होने के कारण उन्हें इस्तीफा देना पड़ा था।

फडनवीस ने बुधवार को महाराष्ट्र भाजपा विधायक दल का नेता चुने जाने के बाद महायुति गठबंधन के घटक दलों के नेताओं के साथ यहां राजभवन में राज्यपाल को समर्थन की चिट्ठी दी और नई सरकार बनाने का दावा पेश किया।

स्मार्ट शहरों की तर्ज पर स्मार्ट गांव बनाए जाने चाहिए : गडकरी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बुधवार को स्मार्ट शहरों की तर्ज पर स्मार्ट गांव बनाने की वकालत की।

गडकरी ने स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर के 42वें दीक्षांत समारोह में कहा, ''हम स्मार्ट शहर बना रहे हैं... हम इस बारे में क्यों नहीं सोच रहे हैं कि हमें स्मार्ट गांव कैसे बनाने चाहिए।'' उन्होंने कहा, ''यह बात मेरे दिमाग में है। मैं भी एक स्मार्ट गांव बना रहा हूं। 1,000 वर्ग फीट का प्लॉट, पांच लाख रुपये में 500 वर्ग फीट का घर... और पूरी जिंदगी बिजली और पानी मुफ्त।''

गडकरी ने कहा कि ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है और ज्ञान को संपत्ति में बदलना देश का भविष्य है। उन्होंने कहा कि शिक्षित जनशक्ति भारत को 5,000 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भर बनाने के प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण में प्रमुख भूमिका निभाएगी। मंत्री ने कहा कि हमें पारिस्थितिकी और पर्यावरण की रक्षा करनी है, लेकिन हमें देश में विकास भी करना है। इसलिए दोनों के बीच समन्वय होना चाहिए।

राष्ट्रीय सुरक्षा हित सर्वोपरि रख कर चीन के साथ आगे बढ़ेंगे : जयशंकर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

हम स्पष्ट हैं कि सीमा क्षेत्रों में शांति और सौहार्द बनाए रखना हमारे संबंधों के विकास के लिए एक पूर्व-आवश्यकता है। आने वाले दिनों में, हम सीमा क्षेत्रों में अपनी गतिविधियों के प्रभावी प्रबंधन के साथ-साथ तनाव कम करने पर भी चर्चा करेंगे।

नई दिल्ली/एजेन्सी। सरकार ने भारत एवं चीन के बीच सीमावर्ती क्षेत्रों में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर अप्रैल 2020 के पूर्व की स्थिति बहाल होने को 'सुधार की दिशा' बताते हुए बुधवार को स्पष्ट किया कि दोनों देशों के संबंधों में प्रगति के लिए सीमा क्षेत्रों में शांति एवं सौहार्द बनाए रखना एक पूर्व-आवश्यकता है और अपने राष्ट्रीय सुरक्षा हितों को सर्वोपरि रखते हुए ही आगे बढ़ेंगे।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने आज राज्यसभा में चीन के साथ 21 अक्टूबर को हुए समझौते तथा उसके बाद भारत एवं चीन के द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति को लेकर एक वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा, मैं सदन को भारत चीन सीमा क्षेत्रों में हाल ही में घटी कुछ घटनाओं और हमारे समग्र द्विपक्षीय संबंधों पर उनके प्रभावों से अवगत कराना चाहता हूँ। सदन को पता है कि 2020 से हमारे संबंध असामान्य रहे हैं, जब चीनी कार्रवाइयों के परिणामस्वरूप सीमा क्षेत्रों में शांति और सौहार्द भंग हुआ था। हाल की घटनाएँ, जो तब से हमारे निरंतर कूटनीतिक जुड़ाव को दर्शाती हैं, ने हमारे संबंधों को कुछ सुधार की दिशा में स्थापित किया है।

विदेश मंत्री ने निकट भविष्य में चीन के साथ संबंधों की दिशा में अपनी अपेक्षाएँ साझा करते हुये कहा हमारे संबंध कई क्षेत्रों में आगे बढ़े हैं, लेकिन हाल की घटनाओं से स्पष्ट रूप से नकारात्मक रूप से प्रभावित हुए हैं। हम स्पष्ट हैं कि सीमा क्षेत्रों में शांति और सौहार्द बनाए रखना हमारे संबंधों के विकास के लिए एक पूर्व-आवश्यकता है। आने वाले दिनों में, हम सीमा क्षेत्रों में अपनी गतिविधियों के प्रभावी प्रबंधन के साथ-साथ तनाव कम करने पर भी चर्चा करेंगे। विघटन चरण के समापन से अब हमें अपने राष्ट्रीय सुरक्षा हितों को सर्वोपरि रखते हुए, अपने द्विपक्षीय संबंधों के अन्य पहलुओं पर विचार करने का अवसर मिला है।

भारत का विदेशी ऋण 2023 में बढ़कर 647 अरब डॉलर पर : विश्व बैंक रिपोर्ट

नई दिल्ली/भाषा। भारत का कुल विदेशी ऋण वर्ष 2023 में 31 अरब डॉलर बढ़कर 646.79 अरब डॉलर हो गया। एक रिपोर्ट में यह कहा गया है। विश्व बैंक की कर्ज पर अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ट कहती है कि 2023 में भारत का ब्याज भुगतान बढ़कर 22.54 अरब डॉलर हो गया जो एक साल पहले 15.08 अरब डॉलर था। रिपोर्ट के मुताबिक, 2023 में भारत का दीर्घकालिक ऋण सात प्रतिशत बढ़कर 498 अरब डॉलर हो गया जबकि अल्पकालिक ऋण मामूली रूप से घटकर 126.32 अरब डॉलर पर आ गया। बीते साल निर्यात के प्रतिशत के रूप में भारत का बाह्य ऋण हिस्सेदारी 80 प्रतिशत थी जबकि ऋण सेवा उसके निर्यात का 10 प्रतिशत थी। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2023 के दौरान शुद्ध ऋण प्रवाह 33.42 अरब डॉलर रहा, जबकि शुद्ध इक्विटी प्रवाह 46.94 अरब डॉलर से अधिक रहा।

तेलंगाना, आंध्र प्रदेश में 5.3 तीव्रता के भूकंप के झटके महसूस किए गए

हैदराबाद/भाषा। तेलंगाना के मुलुगु में बुधवार सुबह 5.3 तीव्रता के भूकंप के झटके महसूस किए गए। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र ने यह जानकारी दी। भूकंप से तत्काल किसी के हताहत होने या संपत्ति के नुकसान की कोई सूचना नहीं है। भूकंप के झटके सुबह सात बजकर 27 मिनट पर महसूस किए गए। तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में कई स्थानों पर भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। मुलुगु के पास वारंगल के कई निवासियों ने बताया कि सुबह साढ़े सात बजे के आसपास उन्हें कुछ सेकंड के लिए झटके महसूस हुए। छत के पंखे हिलने लगे और अलमारियों से सामान गिरने लगा। मुलुगु राज्य की राजधानी से करीब 200 किलोमीटर की दूरी पर है।

राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (एनजीआरआई) के सेवानिवृत्त वैज्ञानिक पूर्णचंद्र राव ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में पांच से अधिक तीव्रता के भूकंप बहुत कम आते हैं। उन्होंने बताया कि 1969 में भद्राचलम में 5.7 तीव्रता का भूकंप आया था, हालांकि इससे कम तीव्रता के भूकंप भी आए हैं।

बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार के लिए हसीना ने मोहम्मद यूनुस की आलोचना की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना ने अल्पसंख्यकों के कथित उत्पीड़न को लेकर देश की अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस पर तीखा हमला करते हुए उन पर अल्पसंख्यकों की रक्षा करने में विफल रहने का आरोप लगाया है।

हसीना ने न्यूयॉर्क में आयोजित एक कार्यक्रम को ऑनलाइन माध्यम से संबोधित करते हुए यूनुस पर ''नरसंहार'' करने और हिंदुओं समेत अल्पसंख्यकों की रक्षा करने में विफल रहने का आरोप लगाया। उन्होंने यह भी दावा किया कि उनके पिता शेख मुजीबुर रहमान की तरह ही उनकी और उनकी बहन शेख रेहाना की हत्या की साजिश रची गई थी।

मुजीबुर रहमान की 1975 में हत्या कर दी गई थी।

अगस्त में बांग्लादेश में बड़े पैमाने पर सरकार विरोधी प्रदर्शनों के कारण देश छोड़कर भारत में शरण लेने के बाद यह हसीना का पहला सार्वजनिक संबोधन था।

उन्होंने पांच अगस्त को ढाका में अपने आधिकारिक आवास पर हुए हमले का जिक्र करते हुए कहा, ''हथियारबंद प्रदर्शनकारियों को 'गणभवन' की ओर भेजा गया। अगर सुरक्षाकर्मियों ने गोलियां चलाई होतीं, तो कई लोगों की जान जा सकती थी। मुझे वहां से जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। मैंने उनसे (सुरक्षाकर्मियों) कहा कि चाहे कुछ भी हो जाए, वे गोलियां न चलाएं।''

रविवार को आयोजित कार्यक्रम में हसीना ने कहा, ''आज मुझ पर नरसंहार का आरोप लगाया जा रहा है। वास्तव में, यूनुस एक सुनियोजित तरीके से नरसंहार में शामिल रहे हैं। इस नरसंहार के पीछे मुख्य षड्यंत्रकारी छात्र समन्वयक और यूनुस हैं।'' हसीना ने कहा कि ढाका में मौजूदा सत्तारूढ़ सरकार अल्पसंख्यकों की रक्षा करने में विफल रही है।

हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी का परोक्ष संदर्भ देते हुए उन्होंने कहा, ''हिंदू, बौद्ध, ईसाई - किसी को भी नहीं बख्शा गया है। ग्यारह गिरजाघरों को ध्वस्त कर दिया गया है, मंदिरों और बौद्ध उपासनास्थलों को तोड़ दिया गया है।

सीबीआई ने साइबर अपराध मामले में दिल्ली-एनसीआर में छापेमारी की

नई दिल्ली/भाषा। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने 117 करोड़ रुपए की अंतरराष्ट्रीय साइबर वित्तीय धोखाधड़ी के मामले में बुधवार को दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों में 10 ठिकानों पर छापेमारी की। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गृह मंत्रालय के साइबर अपराध समन्वय केंद्र से मिली शिकायत के आधार पर दर्ज किये गये मामले की जांच के तहत यह छापेमारी की गयी।

प्राथमिकी में आरोप लगाया गया है कि अज्ञात संगठित साइबर अपराधी एवं संदिग्ध विदेशी ठग पूरे भारत में सुनियोजित वित्तीय ठगी में लगे हुए हैं। सीबीआई प्रवक्ता ने एक बयान में कहा, ''अब तक की जांच से खुलासा हुआ है कि विदेशों से अपनी गतिविधियां संचालित कर रहे ये ठग भारत में लोगों को अपना शिकार बनाने के लिए वेबसाइट, व्हाट्सअप और टेलीग्राम का इस्तेमाल करते हैं।''

2026 तक नक्सलवाद समाप्त करने के लिए प्रभावी रणनीति तैयार कर रही छत्तीसगढ़ सरकार : साय

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

रायपुर/भाषा। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि राज्य सरकार मार्च 2026 तक नक्सलवाद समाप्त करने की दिशा में प्रभावी रणनीति तैयार कर रही है। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि पुलिस मुख्यालय में मुख्यमंत्री साय की अध्यक्षता में नक्सल परिदृश्य पर समीक्षा बैठक की गई।

साय ने बैठक में कहा, राज्य सरकार ने 11 महीनों में नक्सलवाद के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ी है। उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मार्च 2026 तक नक्सलवाद समाप्त करने के संकल्प का उल्लेख करते हुए कहा, हमें उसी दिशा में प्रभावी रणनीति तैयार करनी हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा, नक्सलियों के आत्मसमर्पण के लिए जन जागरूकता अभियान को और तेज करने की आवश्यकता है। बस्तर क्षेत्र के लोग अब नक्सलवाद से मुक्त होकर विकास की ओर बढ़ना चाहते हैं, जिसकी झलक हाल ही में संपन्न बस्तर ओलंपिक में भी दिखी।

अधिकारियों ने बताया कि साय ने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आत्मसमर्पित नक्सलियों और नक्सल पीड़ित परिवारों के लिए 15 हजार मकानों के निर्माण कार्य जल्द पूरा करने का निर्देश दिया।

मुख्यमंत्री ने विश्वास जताया कि सामूहिक प्रयासों और जनभागीदारी से छत्तीसगढ़ जल्द ही नक्सलवाद मुक्त होगा।

साय ने कहा कि सरकार की प्राथमिकता स्थानीय समुदायों के जीवन स्तर को सुधारने और विकास की नई ऊंचाइयों को हासिल करने की है।

बैठक में उपमुख्यमंत्री और गृहमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि नक्सलवाद को समाप्त करने के लिए राज्य सरकार ठोस कार्रवाई कर रही है। उन्होंने नागरिक समाजों को अभियान से जोड़ने और नक्सलियों के आत्मसमर्पण के लिए किए जा रहे प्रयासों को तेज करने पर बल दिया।

शर्मा ने नक्सलियों के वित्तीय नेटवर्क को तोड़ने की आवश्यकता पर जोर दिया और कहा कि लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हर संभव उपाय किए जाएंगे।

अधिकारियों ने बताया कि बैठक में सुरक्षा ग्रिड का विस्तार, नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में नए कैंप स्थापित करना, आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों के पुनर्वास और आवास संबंधी योजनाएं तथा संयुक्त कार्य योजना सहित अन्य विषयों पर चर्चा की गई।

उन्होंने बताया कि बैठक में पुलिस महानिदेशक अशोक जुनेजा, गृह विभाग के अपर मुख्य सचिव गृह मनोज पिंगुवा और अन्य अधिकारी मौजूद थे।

समय की पाबंदी में एयरलाइन को लगातार उच्च अंक मिले : इंडिगो

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। इंडिगो ने उड़ानों के समय पर परिचालन में पीछे रहने का दावा करने वाले एक सर्वेक्षण को नकारते हुए बुधवार को कहा कि एयरलाइन ने समय की पाबंदी के मामले में लगातार उच्च अंक हासिल किए हैं।

यह सर्वेक्षण यूरोपीय संघ की दावा प्रसंस्करण एजेंसी 'एयरहेल्प' द्वारा किया गया था। इसने दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे लोकप्रिय एयरलाइंस की तुलना कर समय की पाबंदी, सेवा की गुणवत्ता और मुआवजे के दावों का बढ़िया प्रबंधन के आधार पर उनकी रेटिंग की है। इस सर्वेक्षण में इंडिगो को समय की पाबंदी जैसे मानकों पर सबसे खराब प्रदर्शन करने वाली एयरलाइंस में रखा गया है। एयरहेल्प की वेबसाइट पर जारी सर्वेक्षण रिपोर्ट के मुताबिक, इंडिगो कुल 109 एयरलाइंस में से 4.80 अंक के साथ 103वें स्थान पर है।

इंडिगो ने एक बयान में इस सर्वेक्षण की विश्वसनीयता पर संदेह जताते हुए कहा कि सर्वेक्षण में भारत से लिए गए नमूनों की संख्या नहीं बताई गई है।

हर रेल यात्री को मिलती है 46 प्रतिशत की सब्सिडी : रेल मंत्री

नई दिल्ली/भाषा। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि देश में हर रेल यात्री को यात्रा टिकट पर 46 प्रतिशत की सब्सिडी दी जाती है। उन्होंने लोकसभा में प्रश्नकाल के दौरान पूरक प्रश्नों का उत्तर देते हुए यह भी कहा कि रेल मंत्रालय यात्रियों के लिए सब्सिडी पर हर साल 56,993 करोड़ रुपए की राशि खर्च करता है। बुजुर्गों और मान्यताप्राप्त पत्रकारों को पहले मिलने वाली सब्सिडी की बहाली की संभावना के बारे में पूछे जाने पर वैष्णव ने कहा, ''भारत सरकार की ओर से यात्रियों को कुल सब्सिडी 56,993 करोड़ रुपए की दी जाती है। हर 100 रुपए की यात्रा सेवा की कीमत 54 रुपए ली जाती है। सभी श्रेणियों के यात्रियों को 46 प्रतिशत की सब्सिडी दी जाती है।'' वैष्णव ने एक पूरक प्रश्न के उत्तर में कहा कि जिस तरह से पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकार में सड़कों से पूरे देश को जोड़ा गया था, उसी तरह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में छोटे और मझोले रेलवे स्टेशनों का विकास किया जा रहा है।

गिग कर्मियों की रोजगार सुरक्षा के लिए कानून बनाने की मांग की कांग्रेस सांसद ने

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस सांसद बी मणिकम टैगोर ने बुधवार को गिग कर्मियों के लिए उचित वेतन, नौकरी की सुरक्षा और सामाजिक लाभ सुनिश्चित करके उनकी रोजगार सुरक्षा के लिए कानून बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। टैगोर ने लोकसभा में शून्यकाल के दौरान इस मुद्दे को उठाया और गिग कर्मियों की दुर्दशा पर प्रकाश डाला, जिसे उन्होंने श्रमिकों के मुद्दे के बजाय मानवाधिकार का मुद्दा बताया। गिग अर्थव्यवस्था में काम करने वाले कर्मी वे होते हैं जो अस्थायी तौर पर स्वतंत्र तरीके से एक से अधिक कंपनियों के लिए काम करते हैं। इनमें विभिन्न ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, खानपान आपूर्ति पोर्टल आदि के लिए डिलिवरी का काम करने वाले कर्मी शामिल हैं।

कांग्रेस सांसद ने कहा, ''मैं आपका ध्यान गिग अर्थव्यवस्था के कर्मचारियों की दुर्दशा की ओर, खासकर अमेजन इंडिया के कर्मचारियों की ओर दिलाना चाहता हूं। इसमें गोदाम के कर्मचारी और डिलीवरी करने वाले लोग शामिल हैं, जो अनुचित वेतन और असुरक्षित कामकाजी परिस्थितियों के खिलाफ विरोध कर रहे हैं।'' टैगोर ने दावा किया, ''ये कर्मचारी लंबे समय तक और भारी दबाव में रहकर 10,000 रुपए प्रति माह से भी कम कमाते हैं।''

ऊंचा शुल्क लगाने की ट्रंप की घोषणा से भारत के लिए पैदा होंगे अवसर : नीति आयोग सीईओ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। नीति आयोग के मुख्य कार्यपालक अधिकारी बीवीआर सुब्रमण्यम ने बुधवार को कहा कि अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा चीन समेत तीन व्यापारिक साझेदारों पर उच्च सीमा शुल्क लगाने की घोषणा से भारत के लिए बड़े निर्यात अवसर पैदा होंगे। इसके साथ ही सुब्रमण्यम ने कहा कि घरेलू उद्योग को इस अवसर का लाभ उठाने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए।

ट्रंप ने पिछले सप्ताह मेक्सिको और कनाडा से आयात पर 25% सीमा शुल्क और चीन से आयात पर 10% अतिरिक्त शुल्क लगाने की बात कही थी। सुब्रमण्यम ने कहा, ट्रंप ने अब तक जो भी घोषणा की है...मुझे लगता है कि भारत के लिए अवसर हैं। हम पहली स्लिप में खड़े हैं और गेंद हमारी तरफ आ रही है। हम इसे पकड़ेंगे या छोड़ देंगे, यह हमें देखना है। मुझे लगता है कि आप अगले कुछ महीनों में कुछ कदम देखेंगे। उन्होंने कहा कि इस कदम की वजह से अमेरिकी व्यापार में बड़ी रुकावटें आने वाली हैं और इससे भारत के लिए 'बहुत बड़े' अवसर पैदा होंगे।

उन्होंने कहा, सवाल यह है कि अगर हम वास्तव में खुद को तैयार करते हैं, तो इससे बहुत बड़ा उछाल आ सकता है... क्योंकि व्यापार में बदलाव होने वाला है। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। पिछले वित्त वर्ष में भारत का अमेरिका को निर्यात 77.51 अरब डॉलर रहा, जबकि आयात 42.2 अरब डॉलर रहा। भारत के आईटी निर्यात राजस्व में भी अमेरिका का हिस्सा 70 प्रतिशत है।

वित्त मंत्री ने बुलेट ट्रेन, मेट्रो कार शेड परियोजनाओं में देरी के लिए एमवीए सरकार को जिम्मेदार बताया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मुंबई/भाषा। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को पूर्ववर्ती कांग्रेस नीत सरकार पर मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन और आरे कॉलोनी में मुंबई मेट्रो कार शेड सहित महाराष्ट्र में प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में रोड़े अटकाने का आरोप लगाया। सीतारमण ने दावा किया कि कांग्रेस, अविभाजित शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की पूर्ववर्ती महाविकास आघाडी(एमवीए) सरकार ने केंद्र सरकार द्वारा मुंबई के उपनगरीय रेलवे नेटवर्क की समस्याओं को हल करने का प्रयास किये जाने पर भी बाधाएं उत्पन्न कीं।

सीतारमण ने राज्य भाजपा विधायक दल की बैठक में यह बात कही। इस बैठक में देवेंद्र फडणवीस को भाजपा विधायक दल का नेता चुना गया और अब वह भाजपा नीत सरकार के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ लेंगे। इस बैठक में केंद्रीय पर्यवेक्षक के तौर पर सीतारमण के साथ विजय रूपाणी भी मौजूद थे। उन्होंने कहा, अगर महा विकास आघाडी सरकार के कार्यकाल के दौरान महाराष्ट्र में कांग्रेस सत्ता में नहीं होती तो मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन पहले ही शुरू हो गई होती। सीतारमण ने मुंबई मेट्रो परियोजना के तहत आरे कार शेड निर्माण में देरी पर भी सवाल उठाया। उन्होंने नवनिर्वाचित पार्टी विधायकों से महाराष्ट्र को शक्तिशाली राज्य बनाने का आह्वान करते हुए कहा, ''हम एक हैं तो सेफ हैं।

'आप' विधायक बाल्यान मकोका मामले में गिरफ्तार, जबरन वसूली मामले में मिली जमानत

नई दिल्ली/भाषा। दिल्ली पुलिस ने बुधवार को आम आदमी पार्टी (आप) के विधायक नरेश बाल्यान को कथित संगठित अपराध से संबंधित एक मामले में गिरफ्तार कर लिया, जबकि कथित जबरन वसूली से संबंधित एक अलग मामले में यहां की एक अदालत ने उन्हें जमानत दे दी। अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट पारस दलाल ने 50,000 रुपए के निजी मुचलके और इतनी ही राशि की जमानत पर आरोपी को राहत प्रदान की। न्यायाधीश ने स्पष्ट किया कि बाल्यान को दूसरे मामले में बुधवार को गिरफ्तार किया गया और वह पुलिस हिरासत में हैं। इससे पहले बुधवार को ही पुलिस ने महाराष्ट्र संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम (मकोका) के तहत दर्ज मामले में बाल्यान को गिरफ्तार करने की अनुमति के लिए अदालत में आवेदन दिया था। हालांकि, न्यायाधीश ने आवेदन को खारिज कर दिया और कहा कि यह ''विचार योग्य नहीं है। उन्होंने यह भी कहा, ''जो भी एजेंसी चाहे कानून के मुताबिक उन्हें (बाल्यान को) गिरफ्तार कर सकती है।''

नीति निर्माण में खाद्य मुद्रास्फीति एक जटिल मुद्दा : ईएसी-पीएम सदस्य शाह

मुंबई/भाषा। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (ईएसी-पीएम) के अंशकालिक सदस्य नीलेश शाह ने बुधवार को कहा कि नीति निर्माण में खाद्य मुद्रास्फीति को शामिल किया जाए या नहीं, इस पर बहस एक जटिल मुद्दा है। उन्होंने सवाल किया कि क्या हम संख्या की सही गणना कर रहे हैं। शाह कोटक म्यूचुअल फंड के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी भी हैं। उन्होंने सवाल किया कि क्या संख्या पर पहुंचते समय गणना में प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई) के तहत 80 करोड़ से अधिक भारतीयों को मुफ्त भोजन को ध्यान में रखा जाता है। उन्होंने कहा कि 80 करोड़ भारतीयों को मुफ्त या सब्सिडी वाले खाद्यान्न से मुख्य संख्या में गिरावट आएगी। शाह ने यह स्पष्ट किया कि ईएसी-पीएम ने अभी इस मुद्दे पर विचार-विमर्श नहीं किया है।

इसरो ने 'प्रोबा-3' अंतरिक्षयान में 'विसंगति' के कारण प्रक्षेपण बृहस्पतिवार तक के लिए स्थगित किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

श्रीहरिकोटा (आंध्र प्रदेश)/भाषा। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने 'प्रोबा-3' अंतरिक्षयान में पाई गई एक ''विसंगति'' के कारण पीएसएलवी-सी59 का प्रक्षेपण बृहस्पतिवार तक के लिए स्थगित कर दिया। बुधवार को प्रस्तावित प्रक्षेपण से चंद मिनट पहले अंतरिक्ष एजेंसी ने यह घोषणा की।

अंतरिक्ष एजेंसी ने यहां अंतरिक्ष केंद्र से प्रक्षेपण की योजना बनाई थी। एजेंसी ने प्रस्तावित प्रक्षेपण से चंद मिनट पहले बयान में कहा, ''प्रोबा-3 अंतरिक्षयान में पाई गई विसंगति के कारण पीएसएलवी-सी59/प्रोबा-3 का प्रक्षेपण कल (बृहस्पतिवार) शाम चार बजकर 12 मिनट पर पुनर्निर्धारित किया गया है।'' अपनी तरह की दुनिया की पहली पहल के तहत 'प्रोबा-3' में दो उपग्रह शामिल हैं, जिसमें दो अंतरिक्षयान एक साथ उड़ान भरेंगे और सूर्य के बाहरी वायुमंडल का अध्ययन करेंगे। इसरो की वाणिज्यिक शाखा 'न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड' को यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी से यह 'ऑर्डर' मिला है। इसरो के एक अधिकारी के अनुसार, ईएसए के वैज्ञानिकों ने प्रक्षेपण से पहले पीएसएलवी-सी59 मिशन के एक उपग्रह में 'विसंगति' की पहचान की, जिसके बाद उन्होंने इसे पांच दिसंबर के लिए पुनर्निर्धारित करने का अनुरोध किया। इस संबंध में एक अधिकारी ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, ''उनके (ईएसए वैज्ञानिकों के) अनुरोध के आधार पर प्रक्षेपण को पुनर्निर्धारित किया गया है।'' इससे पहले दिन में, इसरो के एक अधिकारी ने कहा था कि यहां स्थित अंतरिक्ष केंद्र के प्रथम प्रक्षेपण स्थल से होने वाले प्रक्षेपण के लिए 25 घंटे की उलटी गिनती की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, जो मंगलवार अपराह्न तीन बजकर आठ मिनट पर शुरू हुई और बुधवार शाम चार बजकर आठ मिनट तक होगी।

मध्यप्रदेश: इंदौर में '50 पैसे' का इनामी बदमाश गिरफ्तार

इंदौर (मध्यप्रदेश)/भाषा। इंदौर में पुलिस ने एक हत्याकांड के गवाह को धमकाने के मामले में '50 पैसे' के इनामी बदमाश को बुधवार को गिरफ्तार किया। पुलिस अधिकारी ने यह जानकारी दी। शहर में पुलिस ने फरार अपराधियों के खिलाफ सांकेतिक इनाम घोषित करने का अनूठा अभियान शुरू किया है।

पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) विनोद कुमार मीना ने संवाददाताओं को बताया कि सौरभ गौड़ उर्फ बिट्टू (24) को गांधी नगर क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि गौड़ ने मल्हारगंज क्षेत्र में एक हत्याकांड के एक गवाह को अदालत में दिया बयान बदलने के लिए डराया-धमकाया था, जिसके बाद वह फरार हो गया था। मीना ने बताया कि गौड़ इस हत्याकांड का मुख्य आरोपी है। उन्होंने कहा कि गौड़ की गिरफ्तारी पर पुलिस की नजरों में उसकी ''हैसियत'' के मुताबिक 50 पैसे का इनाम घोषित किया गया था। डीसीपी ने बताया, हम फरार बदमाशों पर नाममात्र की राशि के सांकेतिक इनाम घोषित कर रहे हैं।

होंडा की भारत में 2026-27 तक तीन नए एसयूवी मॉडल लाने की योजना

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। जापानी कार विनिर्माता होंडा भारतीय बाजार के एसयूवी खंड में उपलब्ध वृद्धि अवसरों का फायदा उठाने के लिए वित्त वर्ष 2026-27 तक तीन नए मॉडल उतारने की योजना बना रही है। कंपनी के एक शीर्ष अधिकारी ने बुधवार को यह जानकारी दी।

होंडा की भारतीय अनुषंगी होंडा कार्स इंडिया के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी ताकुया त्सुमुरा ने यहां पीटीआई-भाषा के साथ बातचीत में कहा कि कंपनी तेजी से बढ़ते एसयूवी बाजार में अपनी मौजूदगी बढ़ाना चाहती है। फिलहाल कंपनी का एक केवल एसयूवी मॉडल 'एलिवेट' ही बाजार में उपलब्ध है। इसके अलावा कंपनी दो अन्य मॉडल अमेज और सिटी की भी बिक्री करती है। त्सुमुरा ने कहा, हम वित्त वर्ष 2026-27 तक एसयूवी खंड में तीन नए मॉडल पेश करने की योजना बना रहे हैं। नए मॉडलों में हाइब्रिड और बैटरी इलेक्ट्रिक दोनों ही विकल्प शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल (एसयूवी) खंड अब भारतीय बाजार में बिकने वाले करीब 40 लाख घरेलू यात्री वाहनों का 50 प्रतिशत से अधिक हिस्सा है। ऐसे में होंडा भारतीय बाजार के अनुकूल एसयूवी मॉडलों का विकास जारी रखेगी। इसके पहले होंडा कार्स इंडिया ने अपनी कॉम्पैक्ट सेडान कार 'अमेज' की तीसरी पीढ़ी को पेश किया। नए अवतार में इसकी कीमत 7.99 लाख रुपए से 10.89 लाख रुपए (एक्स-शोरूम) के बीच रखी गई है। यह मॉडल 'मैनुअल' और 'ऑटोमैटिक' दोनों संस्करणों के साथ आता है। इसके जरिये कंपनी मारुति सुजुकी की डिजायर और हुंदै की ऑरा को चुनौती देना चाहेगी। त्सुमुरा ने नई पेशकश पर कहा, अमेज ने हमेशा भारतीय ग्राहकों के दिलों में खास जगह बनाई है और यह नई पीढ़ी का मॉडल उनकी बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हमें विश्वास है कि यह नई अमेज नए मानक स्थापित करेगी और भारत में होंडा की विरासत को मजबूत करना जारी रखेगी। उन्होंने कहा कि कंपनी ने अब भारत में सभी मॉडलों में एडीएएस तकनीक पेश की है और अमेज भारत में इस तकनीक से लैस सबसे सस्ती कार है। अमेज होंडा की लोकप्रिय कार रही है और कंपनी अब तक इसकी 5.8 लाख इकाइयों की बिक्री कर चुकी है। इस मॉडल को पहली बार 2013 में पेश किया गया था जबकि दूसरी पीढ़ी को 2018 में लाया गया था।

संभल जाने से रोके गए राहुल गांधी दिल्ली लौटे

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

गाजियाबाद (उप्र)/भाषा। संभल हिंसा के पीड़ितों से बुधवार को मुलाकात करने जा रहे कांग्रेस सांसद राहुल गांधी को उनके गंतव्य जनपद में निषेधाज्ञा लागू होने का हवाला देते हुए दिल्लीह्लाजीपुर सीमा पर रोक लिया गया। राहुल ने इसे लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष के तौर पर अपने विशेषाधिकारों का हनन करार दिया है।

पुलिस और कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच लंबी बहस के बाद भी बात नहीं बनने पर राहुल करीब दो घंटे बाद दिल्ली लौट गये। राहुल के काफिले को रोके जाने से मार्ग के दोनों तरफ काफी लम्बा रास्ता जाम हो गया और राहगीरों को दिक्कतों का सामना करना पड़ा। संभल रवाना होने के बाद दिल्लीह्लाजीपुर सीमा पर पुलिस द्वारा रोके गये राहुल ने संवाददाताओं से कहा, ''हम संभल जाने की कोशिश कर रहे हैं, मगर पुलिस मना कर रही है। लोकसभा में नेता विपक्ष के नाते मेरा अधिकार बनता है कि मैं जा सकता हूं, मगर तब भी वह मुझे रोक रहे हैं। यह लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष के मेरे अधिकार के खिलाफ है। मैंने कहा है कि मैं अकेला जाने को तैयार हूं... पुलिस के साथ जाने को तैयार हूं मगर उन्होंने वह भी बात नहीं मानी और अब कह रहे हैं कि कुछ दिन बाद वह हमें जाने देंगे।'' राहुल ने संविधान की प्रति दिखाते हुए कहा, ''यह (संभल जाने से रोका जाना) लोकतंत्र के खिलाफ है। हम संभल जाकर देखना चाहते हैं कि वहां क्या हुआ। हम लोगों से मिलना चाहते हैं लेकिन मेरा जो संवैधानिक अधिकार है, मुझे उससे वंचित किया जा रहा है। यह संविधान को खत्म करने वाला हिंदुस्तान है। अंबेडकर जी के संविधान को खत्म करने वाला हिंदुस्तान है। मगर हम लड़ते रहेंगे।''

राहुल के साथ कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाद्रा ने भी राहुल को रोके जाने पर नाराजगी जाहिर करते हुए कहा, ''संभल में जो हुआ, वह गलत है। राहुल जी नेता प्रतिपक्ष हैं। उनके संवैधानिक विशेषाधिकार हैं जो बाकी लोगों से अलग हैं। उनको रोका नहीं जा सकता।'' उन्होंने कहा, ''राहुल जी को नेता प्रतिपक्ष के रूप में संवैधानिक अधिकार मिले हैं। उन्हें पीड़ितों से मिलने जाने दिया जाए।''

द्रमुक सांसद ने त्वरित वितरण कंपनियों की ओर से दवा पहुंचाए जाने पर जताई चिंता

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई/नई दिल्ली। राज्यसभा में बुधवार को द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) सदस्य कनिमोझी एनवीएन सोमू ने ऑनलाइन आर्डर के जरिए कंपनियों द्वारा 10 मिनट में ग्राहकों तक दवा पहुंचाए जाने के दावे का मुद्दा उठाया और इस पर चिंता जताते हुए सरकार से ऐसी डिलीवरी पर तुरंत रोक लगाने की मांग की। उच्च सदन में शून्यकाल में उन्होंने कहा कि जल्दबाजी में ये कंपनियां दवा नियमों का उल्लंघन कर सकती हैं और इससे ग्राहकों के स्वास्थ्य पर असर भी पड़ सकता है।

सोमू ने कहा, ''अल्ट्रा फास्ट डिलीवरी मॉडल से लोगों तक दवाओं की 10 मिनट में डिलीवरी करने का मॉडल भारतीय दवा नियमों का उल्लंघन करता है और जनता के लिए स्वास्थ्य और सुरक्षा जोखिम पैदा करता है।''

उन्होंने आगे कहा कि केमिस्ट और ड्रगिस्ट के एक अखिल भारतीय संगठन ने भी इस मॉडल पर गंभीर चिंता व्यक्त की है।

उन्होंने कहा, ''यह एक खतरनाक मॉडल है ... (यह) रोगियों की सुरक्षा के लिए आवश्यक नियामक जांच को दरकिनार कर देगा।'' सोमू ने कहा कि भारत में दवाओं के वितरण और आपूर्ति में उपभोक्ताओं को नुकसान से बचाने के लिए सख्त दिशानिर्देश (प्रोटोकॉल) हैं। राज्यसभा सदस्य ने सरकार से त्वरित वितरण कंपनियों द्वारा दवाओं के वितरण को रोकने के लिए तत्काल कार्रवाई का आग्रह किया। शून्यकाल में ही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नरेश बंसल ने सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिए ओटीटी मंचों पर सेंसरशिप लागू करने की मांग की।

उन्होंने कहा, ''आजकल, बच्चों को मोबाइल फोन के माध्यम से विभिन्न प्रकार की सामग्री देखने को मिल रही है, जिस पर कोई नियंत्रण नहीं है। इनमें कई बार आपत्तिजनक और हानिकारक सामग्री होती है जो मानसिक रूप से परेशान करने वाले होते हैं। वे आपत्तिजनक दृश्य भी देखते हैं। इस पर रोक लगनी चाहिए। साफ सुथरी सामग्री रहेगी तो कई गुना ज्यादा चलेगा। और लोग इसे देखना पसंद करेंगे।''

उन्होंने कहा कि इनमें ऐसे आपत्तिजनक शब्द और संवाद होते हैं कि बच्चे उन्हें सीखते हैं और फिर बोलना शुरू कर देते हैं। उन्होंने कहा, ''स्वतंत्रता का सही तरीके से इस्तेमाल नहीं हो रहा है तो सेंसरशिप होनी चाहिए। अगर ओटीटी मंच सीमा पार करते हैं तो उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए।''

उन्होंने कहा, ''वर्तमान में ओटीटी मंचों पर जो कुछ दिखाया जाता है, इसके लिए कोई नियम नहीं है। जो कुछ दिखाया जाता है उस पर कोई नियंत्रण नहीं है। ऐसे में सरकार को चाहिए कि ओटीटी सामग्री एक नियामक ढांचे के तहत हो और सरकार को इसके लिए प्रयास करना चाहिए।''

सीवीआरडीई ने मनाया स्वच्छता पखवाड़ा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। स्वच्छता पखवाड़ा समारोह 2024 सीवीआरडीई (डीआरडीओ), अवाडी मनाया गया। सीवीआरडीई के कर्मचारियों द्वारा 2 दिसंबर को सामूहिक शपथ ली गई, जिसके बाद 4 दिसंबर को निगम सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अवाडी की सफाई की गई।

उत्कृष्ट वैज्ञानिक और सीवीआरडीई के निदेशक जे राजेश कुमार ने छात्र समुदाय को संबोधित किया और स्वच्छता पखवाड़ा पर प्रकाश डाला, जो माननीय प्रधानमंत्री द्वारा स्वच्छता को हर किसी का काम बनाने के लिए शुरू की गई एक पहल है।

इस समारोह में क्षेत्रीय जनसंपर्क अधिकारी के अनबाझगन, प्रधानाध्यापिका, निगम सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अवाडी के शिक्षक और सीवीआरडीई कार्य समिति के सदस्य मौजूद थे।

सथानूर बांध कांड द्रमुक की लापरवाही का नतीजा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। तमिलनाडु भाजपा प्रवक्ता एएनएस प्रसाद ने एक विज्ञप्ति में बताया कि सथानूर बांध को बिना किसी पूर्व चेतावनी के अचानक खोल दिया जाना, जिसके परिणामस्वरूप उत्तरी जिलों में भयंकर बाढ़ आई और जान-माल का नुकसान हुआ, द्रमुक सरकार की प्रशासनिक विफलता का स्पष्ट संकेत है। मुख्यमंत्री एमके स्टालिन और जल संसाधन विभाग के मंत्री दुरईमुरुगन को शासन में इस गंभीर चूक की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। बांध के खुलने की पूर्व चेतावनी देने में मंत्री दुरईमुरुगन की विफलता के लिए उन्हें तत्काल इस्तीफा देना चाहिए।

द्रमुक सरकार की घोर लापरवाही और अक्षमता के कारण तिरुवन्नामलाई, कल्लाकुरिची, विलुप्पुरम और कुड्डालोर जिलों में भयावह बाढ़ आई है। बिना किसी पूर्व चेतावनी के सथानूर बांध को अचानक खोलने से अभूतपूर्व तबाही हुई है, जिससे अनगिनत परिवार विस्थापित हो गए हैं और आजीविका नष्ट हो गई है। मंत्री दुरईमुरुगन द्वारा समय पर चेतावनी देने में विफलता स्पष्ट रूप से कर्तव्य की उपेक्षा है, तथा स्थिति को कमतर आंकने का उनका प्रयास जनता के विश्वास के साथ घोर विश्वासघात है। मंत्री के अनुभव और विशेषज्ञता का दुरुपयोग लोगों को धोखा देने के लिए किया गया है, लेकिन वे मूर्ख नहीं बनेंगे।

द्रमुक सरकार ने स्थिति को जिस तरह से संभाला है, वह 2015 की चेन्नई बाढ़ की याद दिलाता है, जो चेम्बरमबक्कम झील के अचानक खुलने के कारण हुई थी। मंत्री दुरईमुरुगन द्वारा सच्चाई को छिपाने के प्रयासों के बावजूद, लोग अंततः तथ्यों को उजागर करेंगे।

तमिलनाडु के लोग मंत्री दुरईमुरुगन के तत्काल इस्तीफे की मांग करते हैं और 2026 के विधानसभा चुनावों में द्रमुक सरकार को उसकी घोर लापरवाही के लिए जवाबदेह ठहराएंगे। पर्याप्त चेतावनी देने और स्थिति से निपटने में सरकार की विफलता ने ऐसी स्थितियों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की उसकी क्षमता पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

प्रसाद ने कहा कि सरकार को अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विनाशकारी बाढ़ के लिए जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह ठहराया जाए। तमिलनाडु के लोग पारदर्शिता, जवाबदेही और न्याय के हकदार हैं।

एंटनी ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं को किया आगाह, 'स्थानीय निकाय चुनावों में 'आसान जीत' की उम्मीद न करें'

तिरुवनंतपुरम/भाषा। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ए.के. एंटनी ने बुधवार को पार्टी कार्यकर्ताओं से केरल में अगले साल होने वाले स्थानीय निकाय चुनाव के लिए तैयार रहने का आग्रह किया और आगाह किया कि वे इस चुनाव में आसान जीत'' की उम्मीद न करें। एंटनी ने हाल में दो विधानसभा सीट और वायनाड लोकसभा क्षेत्र के लिए हुए उपचुनावों के दौरान पार्टी के एकजुट और व्यवस्थित प्रयासों की सराहना की। उन्होंने नेताओं से कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे (यूडीएफ) को मजबूत करने और राज्य में सत्ता में वापसी के लिए इस एकता को बनाए रखने का आग्रह किया।

एंटनी ने संवाददाताओं से कहा, यूडीएफ को मजबूत करने और केरल में कांग्रेस का मुख्यमंत्री सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक प्रयास जारी रहना चाहिए। वरिष्ठ नेता ने ये टिप्पणियां नवनिर्वाचित पलक्कड़ विधायक राहुल ममकूटथिल और पार्टी के अन्य युवा नेताओं से मुलाकात के दौरान कीं। एंटनी ने कहा, आगामी स्थानीय निकाय चुनावों में कड़ी प्रतिस्पर्धा होगी। कांग्रेस और यूडीएफ को तुरंत तैयारी शुरू कर देनी चाहिए। मेरा मानना है कि किसी को भी आसान जीत की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

विशेष रेलगाड़ियों की सेवाओं का विस्तार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां दक्षिण रेलवे से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार पूर्वी तट रेलवे ने अतिरिक्त भीड़ को नियंत्रित करने के लिए कुछ विशेष ट्रेनों की अवधि में विस्तार की अधिसूचना जारी की है।

ट्रेन संख्या 08311 संबलपुर-इरोड स्पेशल बुधवार को संबलपुर से 11.35 बजे रवाना होकर अगले दिन 20.30 बजे इरोड पहुँचेगी। यह 13 सेवाएं 11, 18, 25 दिसंबर, 01, 08, 15, 22, 29 जनवरी और 05, 12, 19, 26 फरवरी और 05 मार्च को बढ़ाई जाएंगी। वापसी दिशा में ट्रेन संख्या 08312 इरोड-संबलपुर एक्सप्रेस स्पेशल शुक्रवार को इरोड से 14.45 बजे रवाना होकर अगले दिन 23.15 बजे संबलपुर पहुंचेगी। इस ट्रेन की 13 सेवाएं 13, 20, 27 दिसंबर, 3, 10, 17, 24, 31 जनवरी, 7, 14, 21, 28 फरवरी और 7 मार्च को चलेगी।

ट्रेन नंबर 08557/08558 विशाखापत्तनम - चेन्नई एग्मोर - विशाखापत्तनम स्पेशल : ट्रेन संख्या 08557 विशाखापत्तनम-चेन्नई एग्मोर स्पेशल शनिवार को 19.00 बजे विशाखापत्तनम से रवाना होकर अगले दिन 08.45 बजे चेन्नई एग्मोर पहुँचेगी। यह ट्रेन 07, 14, 21, 28 दिसंबर, 04, 11, 18, 25 जनवरी, 01, 08, 15, 22 फरवरी और 01 मार्च को चलेगी। (13 सेवाएँ) ट्रेन संख्या 08558 चेन्नई एग्मोर - विशाखापत्तनम स्पेशल रविवार को चेन्नई एग्मोर से 10.30 बजे रवाना होकर अगले दिन 22.35 बजे विशाखापत्तनम पहुँचेगी, जिसे 08, 15, 22, 29 दिसंबर, 05, 12, 19, 26 जनवरी, 02, 09, 16, 23 फरवरी और 02 मार्च को चलाया जाएगा (13 सेवाएँ) ट्रेनों के समय, ठहराव और संरचना में कोई बदलाव नहीं होगा। उपरोक्त विशेष ट्रेनों के लिए अग्रिम आरक्षण खुला है।

बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध में कोयम्बटूर में हुआ व्यापक प्रदर्शन

विभिन्न हिन्दू संगठनों ने जताया विरोध, किया प्रदर्शन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोयम्बटूर। शहर में बुधवार को गांधीपुरम के शिवानंदा कॉलोनी स्थित पॉवर हाउस मुख्यालय में शहर के 40 से अधिक हिन्दू संगठनों ने बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रही अमानवीय अत्याचार के विरोध में प्रदर्शन किया। इस मौके पर विभिन्न प्रदर्शनकारियों सहित भाजपा के नेता एच. राजा, जिला अध्यक्ष रमेशकुमार व 50 से अधिक आरएसएस, हिन्दू मुनानी व अन्य हिन्दू संगठनों के कार्यकर्ताओं को पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया। इस मौके पर एच. राजा ने कहा कि बांग्लादेश में हिन्दुओं कर अत्याचार, हिन्दू धार्मिक स्थलों पर हमला, गायों का वध, हिन्दुओं को सरकारी नौकरी से जबदस्ती इस्तीफा देने पर मजबूर करना बहुत ही निंदनीय कार्य है। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार न केवल हिन्दुओं के हित की अनदेखी कर रही है बल्कि उनके खिलाफ हो रही अत्याचारों को मौन समर्थन भी दे रही है।

वहीं दूसरी ओर कोयम्बटूर जिले के मेट्टुपाल्यम् में भाजपा शहर अध्यक्ष सेंथिलवेल और आरएसएस जिला अध्यक्ष अर्मस्ट्रांग पलनीस्वामी के नेतृत्व में नगर निगम कार्यालय के सामने 25 से ज्यादा हिंदू संगठनों के 500 से अधिक लोगों ने प्रदर्शन किया। पोल्लाची में भी हिन्दुओं के समर्थन में आयोजित प्रदर्शन में तनाव की स्थिति बन गई और भाजपा जिला अध्यक्ष वसंत राजन के नेतृत्व में विभिन्न हिन्दू संगठनों ने प्रदर्शन किया और शांतिपूर्ण ढंग से गिरफ्तारी दी।

सरकार और रियल एस्टेट क्षेत्र को एक स्थायी भारत बनाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए : खरगे

बेंगलूरु। बुधवार को यहां 'प्रोपगेट 2024,' ब्रिगेड आरईएपी का वार्षिक प्रमुख कार्यक्रम, भारत का अग्रणी रियल एस्टेट एक्सेलेरेटर कार्यक्रम जिसका फोकस प्रॉपटेक पर है, का उद्घाटन सूचना प्रौद्योगिकी और जैव प्रौद्योगिकी और विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री प्रियांक खरगे ने किया। खरगे ने इस बात पर जोर दिया कि सरकार और रियल एस्टेट क्षेत्र को एक स्थायी भारत बनाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। उन्होंने कहा, भारत का रियल एस्टेट क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 7.3 प्रतिशत का योगदान देता है और 2030 तक इसका राजस्व 1 ट्रिलियन डॉलर तक बढ़ने वाला है।

कर्नाटक में रियल एस्टेट की जबरदस्त संभावनाएं हैं और बेंगलूरु इस वृद्धि का नेतृत्व करने के लिए तैयार है, जिसमें प्रोपटेक उस वृद्धि के उत्प्रेरक के रूप में उभर रहा है। हम ऐसे प्लेटफ़ॉर्म बनाने के लिए सही समय पर हैं जहाँ उद्योग, रियल एस्टेट क्षेत्र और सरकार एक साथ मिलकर काम करते हैं और इस क्षेत्र के लिए सही नीतियाँ बनाते हैं। कर्नाटक सरकार भारत की पहली सर्कुलर आर्थिक नीति पर काम कर रही है, जिसके तहत हम यह सुनिश्चित करेंगे कि सभी निर्माण सामग्री का 20 प्रतिशत संधारणीय होना अनिवार्य होगा।

केरल के सांसदों के साथ गृह मंत्री से मिलीं प्रियंका, वायनाड के लोगों की मदद का आग्रह किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने बुधवार को केरल के कई लोकसभा सदस्यों के साथ गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की और वायनाड में भूस्खलन प्रभावित लोगों की मदद का आग्रह किया।

संसद भवन परिसर स्थित शाह के कार्यालय में यह मुलाकात हुई। मुलाकात के दौरान केरल से ताल्लुक रखने वाले कांग्रेस, आईयूएमएल और आरएसपी के सांसद के मौजूद थे। शाह से मुलाकात के बाद वायनाड से सांसद प्रियंका गांधी ने कहा, हमने गृह मंत्री जी से मिलकर उन्हें वायनाड के हालात से अवगत करवाया है। वहां के लोगों के जीवन पर भूस्खलन का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। लोगों के परिवार और घर उजड़ गए हैं, उनके पास कोई सहयोग तंत्र नहीं बचा है।'' इन हालात में केंद्र सरकार अगर कुछ न करे, तो लोग किससे उम्मीद करेंगे। हमने गृह मंत्री जी से अपील की है कि राजनीति को परे वायनाड के लोगों की मदद की जाए। कांग्रेस महासचिव ने कहा, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वहां पीड़ितों से मिले थे, तब लोगों को मदद की उम्मीद जगी थी, लेकिन अभी तक कोई मदद नहीं मिल पाई है। वायनाड में इस साल जुलाई में भूस्खलन के कारण भारी तबाही हुई थी जिसमें कई लोगों की मौत हो गई थी।

सड़क दुर्घटना में एक तीर्थयात्री की मौत, 19 घायल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोल्लम/भाषा। कोल्लम में बुधवार तड़के आर्यकावु चौकी के निकट तमिलनाडु से श्रद्धालुओं को ले जा रही एक मिनी बस और एक मालवाहक ट्रक के बीच टक्कर हो गई, जिसमें एक तीर्थयात्री की मौत हो गई और 19 लोग घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। तेनमाला पुलिस थाने के एक अधिकारी ने बताया कि मिनी बस सबरीमला से लगभग 24 तीर्थयात्रियों को लेकर तमिलनाडु लौट रही थी, तभी उसकी टक्कर एक मालवाहक ट्रक से हो गई। अधिकारी ने बताया कि घायलों में से 17 यात्रियों का पुनालुर अस्पताल में उपचार किया जा रहा है, जबकि दो अन्य को तिरुवनंतपुरम राजकीय मेडिकल कॉलेज रेफर' किया गया है। उन्होंने बताया कि दुर्घटना के असल कारण फिलहाल पता नहीं लग पाए हैं।

वक्फ नीति के खिलाफ बीदर में भाजपा का राज्यव्यापी संघर्ष शुरू

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बीदर। भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष और विधायक विजयेन्द्र येडीयुरप्पा ने कहा कि मैसूरू 'मुडा' घोटाले की चर्चा सरकार ने सदन में नहीं होने थी लेकिन जब भाजपा ने बेंगलूरु से मैसूरू पदयात्रा की और लोगों को इस प्रकरण के बारे में बताया तो मुख्यमंत्री ने पद गंवाने के डर से 14 मुडा की साइटें वापस सरकार को दे दी। बुधवार को बीदर में वक्फ संबंधी संघर्ष की शुरुआत करते हुए विजयेन्द्र ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने कहा था कि 14 प्लाट वापस करने के लिए मुडा को 62 करोड़ रुपए देने होंगे लेकिन भाजपा के संघर्ष यात्रा का नतीजा यह रहा कि मुख्यमंत्री की पत्नी ने न सिर्फ बिना एक रुपए लिए पत्र लिखकर अवैध साइटें वापस की। उन्होंने कहा कि भाजपा लगातार भ्रष्ट और किसान विरोधी कांग्रेस सरकार के खिलाफ लड़ रही है और वे उन्हें न्याय देने के लिए तैयार हैं।

उन्होंने पूछा कि क्या सिद्दरामय्या किसानों और हिंदुओं से नाराज हैं। यह समझाने के अलावा कि मंत्री जमीर अहमद खान ने मुख्यमंत्री के आदेश पर किसानों की जमीन को वक्फ के नाम करने का निर्देश दिया था। उन्होंने बताया कि हजारों साल के इतिहास वाले एक मंदिर को ऐसा नोटिस मिला है। उन्होंने आलोचना करते हुए कहा कि वे गांव-गांव को एक करने का काम कर रहे हैं। उन्होंने आपत्ति जताई कि सरकार पीढ़ी दर पीढ़ी खेती करने वाले किसानों को परेशान कर रहे हैं।

विजयेन्द्र ने सरकार को आड़े हाथ लेते हुए कहा कि देश और प्रदेश की जनता को चावल उपलब्ध कराने वाले किसानों को कांग्रेस सरकार सड़क पर ला रही है। पूर्व मुख्यमंत्री येडीयुरप्पा ने सुझाव दिया कि सिद्दरामय्या अल्पसंख्यक सीएम की तरह काम कर रहे हैं और उन्हें करारा जवाब दें। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के तौर पर मैं और हमारे सभी नेता प्रदेशभर में आर-पार की लड़ाई लड़ने को तैयार हैं। उन्होंने कहा कि यह सरकार, जो सत्ता का स्तंभ है, पैसे से भरपूर है और किसानों की आंखों में आंसू लाती है, सरकार किसानों के पक्ष में नहीं है। उन्होंने चेतावनी दी कि वह किसानों के लिए लड़ेंगे और सिद्दरामय्या को सबक सिखाएंगे। बीजेपी आपके लिए कंधे से कंधा मिलाकर लड़ाई लड़ेगी। उन्होंने कहा कि वक्फ कानून को लेकर किसानों को चिंता करने की जरूरत नहीं। उन्होंने कहा कि बीजेपी आपके पक्ष में है। उन्होंने घोषणा की कि वह जिला कलेक्टर कार्यालय जाएंगे और याचिका दायर करेंगे।

लोकायुक्त पुलिस को भेजा गया ईडी का पत्र राजनीति से प्रेरित है : सिद्दरामय्या

मुडा मामला

मंड्या। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरामय्या ने बुधवार को मैसूरू शहर विकास प्राधिकरण (एमयूडीए) भूखंड आवंटन मामले के संबंध में राज्य लोकायुक्त पुलिस को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा हाल में भेजे गए पत्र को ''राजनीति से प्रेरित'' बताया और कहा कि यह पत्र उन्हें और अदालत को प्रभावित करने के इरादे से भेजा गया है। उन्होंने कहा कि ईडी के पास मामले की जांच करने का कोई अधिकार नहीं है।

ईडी को मुडा (एमयूडीए) द्वारा मुख्यमंत्री सिद्दरामय्या की पत्नी बीएम पार्वती को 14 भूखंडों को आवंटित करने के मामले में कई अनियमितताओं के सबूत मिले हैं। केंद्रीय एजेंसी ने मंगलवार को यह जानकारी दी थी। उन्होंने लोकायुक्त को ईडी के पत्र पर पूछे गए सवाल के जवाब में कहा, यह राजनीति से प्रेरित है। कल एकल पीठ के आदेश के खिलाफ हमारी रिट अपील (उच्च न्यायालय में खंडपीठ के समक्ष सुनवाई के लिए) आने वाली है, यदि उन्होंने इसके ठीक पहले ऐसा किया है, तो इसका क्या मतलब है? सबसे पहले तो उसके पास (ईडी) जांच करने का कोई अधिकार नहीं है, वे कानूनी तौर पर ऐसा नहीं कर सकते। दूसरे, उसने अदालत को प्रभावित करने के लिए ऐसा किया है। मुख्यमंत्री ने यहां संवाददाताओं से कहा, ''लोकायुक्त जांच कर रहे हैं और उन्हें रिपोर्ट सौंपनी होगी। यह उन्हें प्रभावित करने और उनके प्रति पूर्वाग्रह रखने के लिए किया गया है। यह राजनीतिक दुर्भावना से प्रेरित है।'' संघीय एजेंसी ने हाल में कर्नाटक लोकायुक्त विभाग को भेजे गए एक पत्र में यह भी दावा किया था कि उसकी जांच में यह भी पता चला है कि एमयूडीए ने बेनामी और अन्य ऐसे लेनदेन में कुल 1,095 भूखंडों को अवैध रूप से आवंटित किया है।

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राजनीतिक दल नादंडा मक्कल काची का पंजीकरण प्रस्तावित है। दल का कार्यालय 8/93, अरामांगदु, पोस्ट- थिल्लैवलगम, तालुक- थिरुथुराईपूंडी, जिला- तिरुवरूर, तमिलनाडु, पिन कोड- 614 706 में स्थित है। इस दल ने जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 29ए के अंतर्गत राजनीतिक दल के रूप में पंजीकरण के लिए भारत के निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली को आवेदन प्रस्तुत किया है। दल के पदाधिकारियों के नाम / पते इस प्रकार हैं:

अध्यक्ष/सभापति : एस. बालासुब्रमण्यन, पुत्र सुब्बैयन, 8/93, अरामांगदु, पोस्ट- थिल्लैवलगम, तालुक- थिरुथुराईपूंडी, जिला- तिरुवरूर, तमिलनाडु, पिनकोड- 614 706

महासचिव/सचिव : एस. मथारामन, पुत्र शंकरन, 3/262, कन्ननमेडु, थलाईकाडु, कोरुक्कई, जिला- तिरुवरूर, तमिलनाडु, पिन कोड- 614 711

कोषाध्यक्ष : पी.वी. अरुमुगम, पुत्र पी. वैरावन, 2/724 सालुगाईपुरम, माथागुपट्टी, जिला- शिवगंगा, तमिलनाडु, पिन कोड-630 553

यदि किसी को नादंडा मक्कल काची के पंजीकरण पर कोई आपत्ति है तो वे इस सूचना के प्रकाशन के 30 दिनों के भीतर सचिव (राजनीतिक दल) भारत का निर्वाचन आयोग, निर्वाचन सदन, अशोक रोड, नई दिल्ली-110 001 को कारणों सहित अपनी आपत्ति भेज सकते हैं।

शिक्षा के साथ कौशल विकास जरूरी : राज्यपाल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि शिक्षा के साथ कौशल विकास प्रशिक्षण जरूरी है। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास से जुड़ी है। इसमें शिक्षा के डिजिटाइजेशन पर विशेष ध्यान दिया गया है। उन्होंने वृत्तचित्रों को शिक्षा का प्रभावी माध्यम बताते हुए दृश्यश्रव्य माध्यम के जरिए शिक्षा के प्रभावी प्रसार का आह्वान किया। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे बुधवार को जोधपुर में 16वें प्रकृति अंतरराष्ट्रीय वृत्तचित्र फिल्म महोत्सव के शुभारंभ पश्चात संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों में एक दूसरे से संवाद जरूरी है इससे अर्जित ज्ञान और विचारों का आदान प्रदान होगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा में प्रभावी प्रस्तुतिकरण ही महत्वपूर्ण है। सीईसी के माध्यम से शिक्षा के डिजिटाइजेशन की नई राहें खुली है। इससे आने वाले समय में भारत देश शिक्षा के क्षेत्र में और तेजी से शिक्षा की ओर अग्रसर हो सकेगा। उन्होंने वृत्त चित्रों को शिक्षित करने का महत्वपूर्ण माध्यम बताते हुए उच्च शिक्षा में इसके प्रभावी उपयोग पर जोर दिया। उन्होंने वृत्तचित्रों के इतिहास की चर्चा करते हुए कहा कि वृत्तचित्र निर्माण में भारत आरंभ से ही अग्रणी रहा है। वृत्तचित्रों से प्रभावी संदेश जाता है और इसका जितना अधिक शिक्षा में उपयोग होगा, देश का सतत विकास होगा।

राज्यपाल ने कहा कि देश को विश्व गुरु बनाने के लिए हम सबको मिलकर काम करना है। उन्होंने कहा कि हमारी अर्थव्यवस्था जल्द ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरेगी। युवाओं पर मुझे विश्वास है, हम सब यह मिल कर सकते है। यह कार्यक्रम नए विचारों के लिए महत्वपूर्ण मंच सिद्ध होगा।

सीईसी के डायरेक्टर प्रोफेसर जे बी नड्डा ने कहा कि सीईसी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के अंतर-विश्वविद्यालय केंद्रों में से एक है। यह उच्च शिक्षा स्तर पर डिजिटल शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिए समर्पित है। उन्होंने कहा कि हम डिजिटल सामग्री प्रारूपों की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ एशिया के सबसे बड़े डिजिटल शिक्षा प्रसार प्लेटफार्म के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने बताया कि 1997 से, सीईसी देश में आईसीटी आधारित शिक्षण वातावरण बनाने के लिए हर साल इस प्रकृति फिल्म महोत्सव का आयोजन करता आ रहा है। यह महोत्सव जिज्ञासा और रचनात्मक दिमागों के साथ जुड़ने के लिए नए विचार सामने लाता है।

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के एल श्रीवास्तव ने कहा कि यह केवल थीम नहीं है बल्कि पूरे विश्व के मानव समाज की प्रकृति का दिग्दर्शन है। आरंभ में 16वें प्रकृति इंटरनेशनल डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म फेस्टिवल पर आधारित 5 मिनट की शॉर्ट फिल्म की भी प्रस्तुति हुई। प्रकृति इंटरनेशनल डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म फेस्टिवल जोधपुर ईएमएमआरसी के निदेशक प्रोफेसर बीआर गाढ़ी ने स्वागत उद्बोधन दिया। सी ई सी के संयुक्त निदेशक डॉ सुनील मेहरू ने सी ई सी की उपलब्धियों और फिल्म फेस्टिवल के बारे मे जानकारी दी।

चुरू में कैंटर और टाटा सफारी गाड़ी के बीच जोरदार टक्कर,पांच लोगों की मौत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चुरू । चुरू जिले की सरदारशहर तहसील के बुकनसर फंटा के पास कैंटर और टाटा सफारी गाड़ी के बीच जोरदार टक्कर हो गई। इस हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई और दो गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यह हादसा रात तीन बजे हनुमानगढ़ रोड मेगा हाईवे पर बुकनसर फंटा के पास हुआ। टाटा सफारी हनुमानगढ़ की तरफ जा रही थी और हनुमानगढ़ की तरफ से कैंटर आ रहा था, दोनों की आमने-सामने से जोरदार भिड़ंत हो गई।

टक्कर इतनी जोरदार थी कि टाटा सफारी के परखच्चे उड़ गए। सूचना मिलने पर मौके पर पुलिस ने क्रेन बुलाई व सफारी में फंसे दो लोगों को बड़ी मशक्कत के बाद निकला गया। सरदारशहर थाना के अधिकारी अरविंद भारद्वाज ने अपनी खुद की गाड़ी में बिठाकर घायलों को अस्पताल पहुंचाया, जहां चार लोगों को मृत घोषित कर दिया गया। वहीं तीन गंभीर घायलों को बीकानेर रेफर किया गया, जहां बीच रास्ते में ही एक व्यक्ति ने दम तोड़ दिया। हादसे में कुल पांच लोगों की मौत हुई है। वहीं दो लोग घायल हैं, जिनका इलाज राजकीय अस्पताल में चल रहा है। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतकों में राणासर बिकान निवासी कमलेश (26), डूंगरगढ़ के रीड़ी निवासी नंदलाल (23), राकेश (25), राजासर बिकान के पवन (33) और सीकर निवासी धनराज शामिल हैं।

अजमेर में दरगाह शरीफ की सुरक्षा के लिए एटीएस के कमांडो लगाए

अजमेर। राजस्थान में अजमेर स्थित सूफी संत ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती के 813वें सालाना उर्स पर दरगाह शरीफ और आसपास की सुरक्षा व्यवस्था चाकचौबंद रखने के उद्देश्य से अजमेर दरगाह थाना पुलिस की मौजूदगी में आतंकवाद निरोधक दस्ता (एटीएस) के कमांडो दल ने दरगाह का बारीकी से निरीक्षण करके सुरक्षा इंतजामों को देखा और सुरक्षा उपायों पर मंथन किया ।

ख्वाजा साहब के सालाना उर्स का झंडा 28 दिसम्बर को चढ़ेगा और रजब का चांद दिखाई देने पर 31 दिसम्बर अथवा एक जनवरी 2025 से विधिवत उर्स की शुरुआत होगी। ऐसे में सुरक्षा एजेंसियां काफी सतर्क हैं। दरगाह थाना पुलिस के साथ एटीएस कमांडो दल ने दरगाह के सभी प्रवेशद्वार और परिसर के भीतरी हिस्सों का निरीक्षण किया एवं सम्भावित किसी भी आपात स्थिति से निपटने की योजना पर मंथन करके सुरक्षा उपायों पर चर्चा की।

उन्होंने दरगाह से ढाई दिन के झोपड़े के मार्ग का भी अवलोकन किया। सुरक्षा दल ने दरगाह में लगे सीसीटीवी कैमरों के विषय में भी जानकारी जुटाई एवं चप्पे-चप्पे का बारीकी से निरीक्षण किया।

उल्लेखनीय है कि दरगाह में सालाना उर्स के सुरक्षा इन्तजाम के साथ दरगाह में मंदिर प्रकरण के चलते सुरक्षा एजेंसियां चौतरफा सतर्क हैं। साथ ही खुफिया एजेंसियां भी पल-पल की गतिविधियों पर निगरानी बनाये हुये हैं।

शिक्षक अनुभव का भंडार, प्रेरक बनकर आगामी पीढ़ी को प्रेरित करें : दिलावर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। शिक्षा संकुल स्थित स्कूल शिक्षा परिषद सभागार में बुधवार को पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान और शिक्षा विभाग के तत्वावधान में भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता शिक्षा ङ्कएवं पंचायतीराज मंत्री मदन दिलावर ने की। 'राजकीय विद्यालयों के विकास में भामाशाह और प्रेरक शिक्षक' विषय पर आयोजित राज्य स्तरीय सेमिनार में जिला एवं राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत राजकीय विद्यालयों के प्रेरक शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इस दौरान राज्य की शिक्षा में गुणवत्ता पर भी चर्चा हुई।

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने इस मौके पर शिक्षकों को अनुभव का भंडार बताते हुए उनके प्रेरक योगदान की सराहना की। उन्होंने शिक्षकों से आगामी पीढ़ी को प्रेरित करने और कमजोर व अभावग्रस्त क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर को सुधारने की अपील की। शिक्षा मंत्री ने शिक्षक समाज की भूमिका और उनके योगदान पर प्रकाश डाला। इस मौके पर राइजिंग राजस्थान समिट 2024 के तहत तीन एमओयू भी साइन किए गए। इससे पहले पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान के महासचिव रामेश्वर प्रसाद शर्मा ने शिक्षा मंत्री को साफा और स्मृति चिन्ह भेंट किया।

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कार्यक्रम की शुरुआत द्वीप प्रज्वलन करके की। उन्होंने विद्यार्थियों के समग्र विकास में शिक्षक की भूमिका को अहम बताया। मंत्री दिलावर ने कहा कि राजकीय विद्यालयों में शिक्षक न केवल ज्ञान का प्रसार कर रहे हैं, बल्कि प्रेरक बनकर जनसहयोग द्वारा शिक्षा के आधारभूत स्तंभ भी बन रहे हैं। उन्होंने कहा कि श्रेष्ठ राजस्थान बनाने के लिए श्रेष्ठ शिक्षा, श्रेष्ठ विद्यार्थी और श्रेष्ठ इंसान बनाना जरूरी है। इसके लिए अपने आपको गलाना पड़ता है, जलाना पड़ता है, प्रकाशवान होना पड़ता है, तभी एक सच्चे और श्रेष्ठ का शिक्षक का उदय होता है।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि एक शिक्षक अनुभव का भंडार है और उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि श्रेष्ठ शिक्षकों को अपनी आने वाली पीढ़ी को प्रेरित करने की आवश्यकता है। इसके लिए 40 की उम्र के बाद शिक्षकों को स्वयं आकर प्रदेश की शिक्षा देश की श्रेष्ठ शिक्षा बनाने पर प्रयास करना चाहिए। अपनी श्रेष्ठता का लाभ कमजोर ङ्कबच्चों एवं अभावग्रस्त विद्यालयों में देकर ऐसा किया जा सकता है। उन्होंने ये भी कहा कि शिक्षा का मतलब है दिशा देने वाला, संस्कार देने वाला, जागृति लाने वाला और ये सभी गुण एक शिक्षक में मौजूद हैं। शिक्षा मंत्री ने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों के जीवन में दिशा, संस्कार और जागरूकता का संचार करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि यह आयोजन न केवल शिक्षकों का सम्मान है, बल्कि शिक्षा की श्रेष्ठता, भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत और समग्र विकास की दिशा में एक कदम साबित होगा।

राजकीय विद्यालयों में विकास के लिए 15 लाख रुपए से अधिक राशि भामाशाहों के जरिए लाने वाले प्रेरक शिक्षकों का सेमिनार में सम्मान किया गया। शिक्षा मंत्री दिलावर ने शॉल ओढ़ाकर और समृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया एवं शिक्षकों का हौसला बढ़ाया। सेमिनार में 16 से अधिक शिक्षकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में शिक्षा मंत्री ने पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान द्वारा इस तरह के आयोजन पर खुशी जताते हुए सम्मानित लोगों में स्वयं को सम्मानित करने पर आभार जताया।

अजमेर दरगाह विवाद पर सचिन पायलट बोले, 'कुछ ताकतें हैं जो जनता का ध्यान सही मुद्दों से भटका रहीं'

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

टोंक । कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और टोंक से विधायक सचिन पायलट बुधवार को विधानसभा क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्र के दौरे पर पहुंचे। यहां पर सचिन पायलट ने मीडिया से बात करते हुए अजमेर दरगाह और संभल विवाद पर बड़ा बयान दिया है। कांग्रेस नेता ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि संभल विवाद और अजमेर दरगाह के सर्वे मामले पर हमला बोलते हुए कहा कि 1991 में धार्मिक स्थलों की यथास्थिति को बनाये रखने को लेकर कानून बना हुआ है, लेकिन सरकार लोगों का ध्यान भटकाने को धार्मिक स्थलों की खुदाई जैसे काम होने दे रही है।

कहीं ना कहीं जो निचली अदालतें हैं, वहां पर इस प्रकार के घटनाक्रम सामने आ रहे हैं जहां पर लोगों में बेवजह तनाव पैदा हुआ है। चाहे वो संभल का मसाला हो या अजमेर का मसाला हो। इस देश में कोई ताकतें हैं जो जानबूझकर चाहती हैं की जनता का ध्यान किसान, महंगाई और बेरोजगारी से हटाकर इन मुद्दों पर आकर्षित किया जाए।

इससे तनाव पैदा होता है। संभल में निर्दोष लोगों की मौत हुई है। इसके लिए कोई न कोई जिम्मेदार है। जो ताकतें लोगों को बांटना चाहती हैं उनसे हमें दूर रहना होगा। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी के संभल जाने पर उन्होंने कहा कि वो संभल जाकर पीड़ित परिवार से मिलना चाहते थे। उन्हें संभल जाने से रोक दिया गया है। वहां पर एक तनाव का माहौल पैदा करने की कोशिश की जा रही है। भाजपा की राजनीति ध्रुवीकरण पर टिकी हुई है। ये धीमी आंच पर हमेशा कुछ ना कुछ सुलगाने की कोशिश करते रहते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि यदि आप देश में यह मुद्दा छेड़ दें कि हमें हर घर, मकान, पूजा स्थल को खोदकर देखना है, तो इसका कोई अंत नहीं होगा। देश की संसद ने 1991 में एक कानून पारित किया था कि आजादी के बाद जो यथास्थिति है, वह बनी रहेगी। रोजगार, महंगाई कम करने पर बात नहीं हो रही है। किसान धरना दे रहे हैं, देश की राजधानी में हज़ारों लाखों किसान पहुंच रहे हैं। वे एसएसपी कानून बनाने की मांग कर रहे हैं। सरकार को उन पर ध्यान देना चाहिए और संसद में भी चर्चा होनी चाहिए।

वहीं किरोड़ी लाल मीणा की तरफ से पिछली रात एसआई भर्ती रद्द मामले में आंदोलन करने वाले नेताओं पर पुलिस कार्रवाई का विरोध करने पर सचिन पायलट ने कहा कि सरकार में शामिल किरोड़ी लाल आवाज उठा रहे हैं। सरकार को जनता की आवाज को सुनना चाहिए। इस दौरान पायलट ने समरावता कांड की न्यायिक जांच किये जाने की मांग उठाई है।

नीमराणा के होटल किंग फायरिंग मामले में लेडी डॉन से पूछताछ, पुलिस के हाथ लगे अहम सुराग

अलवर। नीमराणा के होटल किंग में 8 सितंबर को 5 करोड़ रुपये की रंगदारी के लिए हुई ताबड़तोड़ फायरिंग के मामले में गिरफ्तार कौशल गैंग की सरगना लेडी डॉन मनीषा चौधरी को राजस्थान पुलिस प्रोडक्शन वारंट पर भोंडसी जेल से नीमराणा लेकर आई है। पूछताछ के लिए पुलिस अधीक्षक दुष्यंत खुद मंगलवार देर शाम नीमराणा पहुंचे। फायरिंग की घटना में मनीषा चौधरी मुख्य आरोपी है। उसने न केवल पूरी घटना की साजिश रची थी, बल्कि मौके पर मौजूद रहकर रंगदारी की पर्ची भी दी थी। इस मामले में पुलिस अब तक मनीषा सहित सात आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है। पुलिस की टीमें अन्य दो मुख्य अभियुक्तों नरेंद्र और पुनीत की तलाश में जुटी हुई हैं।

गौरतलब है कि मनीषा चौधरी गुरुग्राम के एक होटल मालिक से 2 करोड़ रुपये की फिरौती मांगने के मामले में भी आरोपी है और उस पर हरियाणा पुलिस ने 20 हजार रुपये का इनाम घोषित किया हुआ है। साथ ही उसे पहले भी खांडसा मंडी प्रकरण में एसटीएफ द्वारा मानेसर से गिरफ्तार किया जा चुका है। एसपी दुष्यंत ने मनीषा से दो घंटे से अधिक समय तक पूछताछ की।

पुलिस को आशंका है कि मनीषा बाहर से कौशल गैंग को निर्देश देकर वारदातों को अंजाम देती थी। नीमराणा फायरिंग मामले में मनीषा की भूमिका अहम मानी जा रही है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि मनीषा चौधरी गैंग के संचालन में सक्रिय भूमिका निभाती थी और उसी ने होटल किंग पर फायरिंग की पूरी योजना बनाकर इसे अंजाम देने के लिए शार्प शूटरों का इस्तेमाल किया था। घटना के समय वह खुद मौके पर मौजूद थी।

दो मोटरसाइकिलों की भिड़ंत के बाद लगी आग, दो लोगों की मौत

जयपुर। राजस्थान के बालोतरा जिले के गिडा थाना क्षेत्र में मंगलवार शाम को दो मोटरसाइकिलों की आमने-सामने की टक्कर में दो युवकों की मौत हो गई। एक पुलिस अधिकारी ने यह जानकारी दी। गिडा थाना के थानाधिकारी देवाराम ने बताया कि जाजवा गांव में दो मोटरसाइकिलों की आमने-सामने की भिडंत में एक मोटरसाइकिल सवार युवक जिंदा जल गया, जबकि दूसरी मोटरसाइकिल पर सवार युवक के सिर में चोट लगी और अस्पताल में उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। उन्होंने बताया कि मंगलवार शाम को श्रवण भील (24) मोटरसाइकिल पर सवार होकर गिडा से अपने गांव जा रहा था जबकि दूसरी मोटरसाइकिल पर सवार स्वरूपाराम सुथार (35)अपनी पत्नी भूरी देवी के साथ जाजवा से गिड़ा की तरफ जा रहा था। देवाराम ने बताया कि हादसे के बाद आग लग गई जिससे श्रवण भील (24) की जिंदा जलने से मौके पर ही मौत हो गई जबकि गंभीर रूप से घायल स्वरूपाराम की अस्पताल में उपचार के दौरान मौत हो गई। उन्होंने बताया कि स्वरूपाराम के साथ मोटरसाइकिल सवार उसकी पत्नी को कोई चोट नहीं आई। देवाराम ने बताया कि शवों को अस्पताल भिजवाया गया है और बुधवार सुबह दोनों का पोस्टमार्टम किया जायेगा।

साथिन कार्यकर्ता पंचायतों के क्रियाकलापों को बच्चों एवं महिला के लिए हितैषी बनाएं : सोनी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपूर। महिला एवं बाल विकास विभाग के शासन सचिव महेन्द्र सोनी ने साथिन कार्यकर्ताओं को पंचायतों को बच्चों एवं महिला की हितैषी बनाने के निर्देश दिए हैं। महेन्द्र सोनी ने बुधवार को यूनिसेफ राजस्थान के सहयोग से पंचायती राज विभाग, महिला अधिकारिता निदेशालय तथा मंजरी संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में 33 जिलों की 66 साथिन कार्यकर्ताओं के दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम पंचायत संग साथिन के दौरान यह निर्देश दिया। सोनी ने पंचायत साथिनों को कहा कि वे बाल एवं महिला हितैषी पंचायत बनाने के पुनीत कार्य में पूर्ण योगदान दें। राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के अंतर्गत एक अनूठी पहल के रूप में पंचायत संग साथिन प्रशिक्षण कार्यक्रम एक सार्थक आयोजन है। इसके माध्यम से पंचायत स्तर पर सकारात्मक भाव से महिला एवं बच्चों के विकास में साथिनें अपनी भूमिका का निर्वहन करें। उन्होंने साथिनों को प्रेरित करते हुए कहा कि साथिन कार्यकर्ताएं ही बाल एवं महिला हितैषी पंचायतें बनाएंगी।

महेन्द्र सोनी ने बताया कि राज्य में 14 वर्ष तक के बच्चों की आबादी 14 प्रतिशत है तथा आधी आबादी महिलाओं की है। इस प्रकार महिलाएं और बच्चे मिलकर 64 प्रतिशत आबादी हैं। ग्राम पंचायत विकास योजना का लाभ इनको मिलना चाहिये। कार्यक्रम के दौरान पंचायत स्तरीय प्रशिक्षण के रुप में साथिनों को विकसित करने के लिये यूनिसेफ एवं विभाग द्वारा तैयार प्रशिक्षण मॉड्यूल तथा पोस्टर का विमोचन महिला एवं बाल विकास विभाग के शासन सचिव महेन्द्र सोनी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में महिला अधिकारिता आयुक्त एवं अतिरिक्त निदेशक महिला अधिकारिता श्रीमती नीतू राजेश्वर, पंचायती राज संयुक्त शासन सचिव गुरुदर्शन सिंह रमाना, साथिन परियोजना यूनिसेफ के सामाजिक नीति विशेषज्ञ शफकत हुसैन उपस्थित रहे। पंचायती राज संयुक्त शासन सचिव गुरुदर्शन सिंह रमाना ने कहा कि महिला और बाल हितैषी पंचायत बनाने के लिए जिलों में इस प्रकार के पंचायत संग साथिन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित होंगे। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उपस्थित साथिनों को सतत विकास स्थानीयकरण, बाल हितैषी पंचायत, महिला हितैषी पंचायत तथा ग्राम पंचायत विकास योजना निर्माण पर विस्तार से प्रशिक्षण दिया गया। ।

मुख्यमंत्री शर्मा ने महाकुंभ में 'राजस्थान पवेलियन' बनाने के लिए जमीन मांगी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने उत्तर प्रदेश के अपने समकक्ष योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर प्रयागराज में अगले वर्ष होने वाले महाकुंभ में 'राजस्थान पवेलियन' बनाने के लिए जमीन आवंटित करने का अनुरोध किया। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, शर्मा ने उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में अगले वर्ष होने वाले महाकुंभ में राजस्थान के श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए 'राजस्थान पवेलियन' बनाने की इच्छा जताई।

शर्मा ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर कुंभ मेला स्थल के निकट राजस्थान का एक पवेलियन स्थापित करने के लिए भूखंड आवंटित करने का आग्रह किया। बयान के अनुसार, पवेलियन बनने से राजस्थान के लाखों श्रद्धालुओं के विश्राम, जलपान तथा चिकित्सा सहित अन्य व्यवस्था सुनिश्चित हो सकेगी।

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में अगले वर्ष 13 जनवरी से 26 फरवरी तक महाकुंभ का आयोजन होगा।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमलों के विरोध में झारखंड में रैलियां निकाली गई

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

धनबाद/गुमला/भाषा। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे हमलों और आध्यात्मिक नेता चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी के विरोध में बुधवार को विभिन्न हिंदू संगठनों से जुड़े लोगों ने झारखंड के धनबाद और गुमला शहरों में रैलियां निकालीं।

दास की तत्काल रिहाई की मांग करते हुए प्रदर्शनकारियों ने भारत सरकार से हस्तक्षेप करने और पड़ोसी देश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों को रोकने का आग्रह किया।

धनबाद में हिंदू राष्ट्रीय समन्वय समिति (एचआरएसएस) ने प्रदर्शन का आयोजन किया, जिसमें धनबाद इस्कॉन, बजरंग दल, भाजपा और अन्य संगठनों के सदस्यों ने भाग लिया। हाथों में तख्तियां लिए और बांग्लादेश सरकार के खिलाफ नारे लगाते हुए प्रदर्शनकारियों ने शहर के रणधीर वर्मा चौक तक मार्च निकाला और वहां लगभग दो घंटे तक प्रदर्शन किया।

इस मौके पर धनबाद के विधायक राज सिन्हा ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा, बांग्लादेश में हिंदुओं को निशाना बनाया जा रहा है, मंदिरों पर हमले किए जा रहे हैं और हिंदुओं के घरों और व्यवसायों को लूटा जा रहा है।

उन्होंने कहा, मैं केंद्र सरकार से इस मामले में हस्तक्षेप करने का आग्रह करता हूं ताकि हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों पर रोक लग सके और वहां मंदिरों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

गुमला में सरना सनातन धर्म के बैनर तले सैकड़ों लोगों ने केदार बागान से सरकारी बस स्टैंड तक मौन रैली निकाली। उन्होंने गुमला के उपायुक्त के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन भी सौंपा।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार का मुद्दा लोकसभा में उठा, सरकार से हस्तक्षेप का अनुरोध

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर अत्याचार और एक हिंदू पुजारी को गिरफ्तार करने का मुद्दा बुधवार को लोकसभा में उठाते हुए हेमा मालिनी समेत भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कुछ सदस्यों ने पड़ोसी देश में हिंदुओं की सुरक्षा के लिए केंद्र सरकार से हस्तक्षेप का अनुरोध किया और संसद से एक प्रस्ताव पारित करने की भी मांग की।

शून्यकाल में इस विषय को उठाते हुए मथुरा से भाजपा सांसद हेमा मालिनी ने कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं पर और इस्कॉन संस्था एवं उसके अनुयायियों पर चरमपंथियों द्वारा किए जा रहे हमले निंदनीय हैं। उन्होंने हिंदू पुजारी चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी का उल्लेख करते हुए कहा कि इस्कॉन के लोग मानवता के लिए अच्छा काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, ''चिन्मय कृष्ण दास बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे, लेकिन उन्हें राजद्रोह का आरोप लगाकर जेल में डाल दिया गया। उनके पक्ष में गवाही देने वाले दो लोगों को भी जेल में डाल दिया गया।'' हेमा मालिनी ने कहा, ''मैं स्वयं कृष्ण भक्त हूं और इस्कॉन की अनुयायी हूं। मैं कृष्ण की पावन नगरी मथुरा की प्रतिनिधि हूं। हम धर्म पर अत्याचार बर्दाश्त नहीं करेंगे। यह विदेश नीति का विषय नहीं है, बल्कि हमारी भावना का विषय है।'' असम से भाजपा सांसद दिलीप सैकिया ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार के मुद्दे को उठाते हुए मांग की, ''भारतीय संसद में एक प्रस्ताव पारित कर बांग्लादेश सरकार को हिंदुओं पर अत्याचार रोकने के लिए कार्रवाई करने का संदेश भेजा जाना चाहिए।''

राहुल के संभल जाने के प्रयास पर बोली भाजपा

अल्पसंख्यक वोटों के लिए सपा से होड़ में है कांग्रेस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अधिकारियों को पूर्व सूचना दिए बिना उत्तर प्रदेश के संभल जाने की कोशिश करने के लिए बुधवार को राहुल गांधी की आलोचना की और दावा किया कि कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच अल्पसंख्यक समुदाय के वोटों के लिए हो रही प्रतिस्पर्धा के तहत नेता प्रतिपक्ष ने यह कदम उठाया।

संभल जिले में 24 नवंबर को एक मस्जिद के सर्वेक्षण के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान हुई हिंसा के मद्देनजर वहां 31 दिसंबर तक बाहरी लोगों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। भाजपा मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने तंज कसते हुए कहा कि राहुल गांधी ने 'किसी सहानुभूति' के लिए संभल जाने की कोशिश नहीं की, बल्कि मीडिया का ध्यान आकृष्ट करने और अपने सहयोगी दल समाजवादी पार्टी के नेताओं की तुलना में 'बेहतर फोटो खिंचवाने' के अवसर को भुनाने की कोशिश के तहत की।

राहुल गांधी, उनकी बहन प्रियंका गांधी वाद्रा और अन्य वरिष्ठ कांग्रेस नेता सुबह राजधानी दिल्ली स्थित गाजीपुर सीमा पर पहुंचे, जहां भारी पुलिस बल तैनात किया गया था और संभल में प्रवेश करने से उन्हें रोकने के लिए बैरिकेड लगाए गए थे। पुलिस के एक वरिष्ठ

अधिकारी ने बताया कि जिले में निषेधाज्ञा लागू होने के कारण उन्हें गाजीपुर सीमा पर रोक दिया गया।

त्रिवेदी ने कहा, ''ऐसा प्रतीत होता है कि सिर्फ मीडिया में सुर्खियां पाने और इंडी गठबंधन को साथ ना रख पाने की छटपटाहट में राहुल गांधी ने यह कार्य किया है।'' भाजपा प्रवक्ता ने परोक्ष रूप से कांग्रेस और समाजवादी पार्टी की ओर इशारा करते हुए कहा, ''दोनों पार्टियों के बीच द्वंद्व चल रहा है।''

उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता प्रोफेसर रामगोपाल यादव ने भी कहा है कि संभल जाने की बात कर कांग्रेस औपचारिकता निभा रही है। त्रिवेदी ने कहा, ''लेकिन हमारा मानना है कि कांग्रेस औपचारिकता नहीं बल्कि विवशता में यह कदम उठा रही है।'' राहुल गांधी को अपनी यात्रा के बारे में अधिकारियों को पूर्व सूचना देनी थी क्योंकि प्रधानमंत्री के बाद वह 'उच्चतम स्तर' की सुरक्षा रखते हैं। उन्होंने कहा, ''राहुल गांधी को नेता प्रतिपक्ष के नाते एएसएल सुरक्षा हासिल है। एएसएल का मतलब उन्नत सुरक्षा संपर्क है। प्रधानमंत्री के बाद सुरक्षा का यह उच्चतम स्तर है। उनके (गांधी के) अलावा केवल गृह मंत्री और रक्षा मंत्री को यह सुरक्षा प्राप्त है।''

भाजपा ने संविधान की धज्जियां उड़ाईं, उपासना स्थल कानून को तार-तार किया : खरगे

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को संभल जाने से रोके जाने के बाद भाजपा पर निशाना साधा और आरोप लगाया कि विभाजनकारी एजेंडे से संविधान की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं और उपासना स्थल कानून को तार-तार कर दिया गया है। खरगे ने पोस्ट किया, ''भाजपा-आरएसएस विभाजनकारी एजेंडे से संविधान की धज्जियां उड़ाने में व्यस्त हैं। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को संभल में पीड़ित परिवारों से मिलने जाने से रोकना इसी बात को साबित करता है। दो समुदायों में नफ़रत पैदा करना ही भाजपा-आरएसएस की एकमात्र विचारधारा है, उसके लिए न केवल संविधान से पारित उपासना स्थल कानून को तार-तार किया, पर अब वो नफ़रत के बाज़ार की शाखाओं को हर जगह खोलने पर उतारू हैं।''

प.बंगाल की मनरेगा राशि केंद्र के निर्देशों का पालन नहीं करने के कारण रोकी गई : शिवराज

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। पश्चिम बंगाल को मनरेगा के तहत धनराशि दो साल से अधिक समय से रुकी होने के बीच केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बुधवार को कहा कि केंद्र सरकार राज्य के साथ कोई भेदभाव नहीं कर रही है और राज्य पर केंद्र सरकार के निर्देशों का पालन नहीं करने का आरोप लगाया।

ग्रामीण विकास मंत्रालय के अनुसार केंद्र सरकार के निर्देशों का पालन नहीं करने के कारण महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के तहत पश्चिम बंगाल के लिए धनराशि मार्च 2022 से रोक दी गई है। चौहान से जब एक संवाददाता सम्मेलन में पूछा गया कि आगे का रास्ता क्या है तो उन्होंने कहा, हम भी पश्चिम बंगाल के गरीब लोगों के बारे में चिंतित हैं। हमने कुछ अनुपालन की मांग की है और यदि राज्य उन्हें पूरा करता है तो हम इस पर विचार करेंगे। चौहान ने यह भी कहा कि राज्य को प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) जैसी अन्य योजनाओं के तहत धनराशि उपलब्ध कराई गई है। चौहान ने कहा, पश्चिम बंगाल को प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत धनराशि मिली है, क्योंकि उसमें कोई विसंगतियां नहीं थीं। हम एक उद्देश्य के लिए धनराशि देते हैं। यदि वह उद्देश्य पूरा नहीं होता है, यदि योजनाओं के नाम बदल दिए जाते हैं, अयोग्य लोगों को लाभार्थी बना दिया जाता है, मानकों का पालन नहीं किया जाता है, तो क्या हमें जवाब नहीं मांगना चाहिए? क्या हमें धन देते रहना चाहिए। उन्होंने कहा, केंद्र को जांच करने का अधिकार है। जांच की गई, अनियमितताएं पाई गईं, इसलिए हमें कार्रवाई करनी पड़ी। मंत्री ने कहा कि यदि अन्य राज्यों में भी ऐसी अनियमितताएं पाई गईं तो कार्रवाई की जाएगी।

वेदांता लांजीगढ़, सिजिमाली क्षेत्रों के विकास के लिए 1,200 करोड़ रुपए खर्च करेगी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

भुवनेश्वर/भाषा। वेदांता एल्युमीनियम ने ओडिशा के कालाहांडी और रायगढ़ जिले में अपने लांजीगढ़ संयंत्र और सिजिमाली खदान के आसपास के क्षेत्रों के विकास के लिए अगले 25 वर्षों में 1,200 करोड़ रुपए खर्च करने की योजना बनाई है। कंपनी के एक अधिकारी ने बुधवार को यह जानकारी दी। कंपनी ने एक बयान में कहा कि यह राशि मौजूदा लांजीगढ़ उपनगरीय क्षेत्र विकास निधि और दोनों जिलों में प्रस्तावित सिजिमाली उपनगरीय क्षेत्र विकास निधि के जरिए खर्च की जाएगी। बयान के मुताबिक इसमें क्षेत्र के विकास के लिए दोनों जिलों के जनप्रतिनिधियों को शामिल किया जाएगा।

कंपनी ने कहा कि दो निकटवर्ती जिलों में फैले सिजिमाली बॉक्साइट ब्लॉक से ओडिशा के सरकारी खजाने में प्रति वर्ष 2,200 करोड़ रुपए का राजस्व आएगा। इसके अलावा, कंपनी ने दावा किया कि उपनगरीय क्षेत्र के आसपास 1,500 से अधिक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

वेदांता एल्युमीनियम के मुख्य परिचालन अधिकारी सुनील गुप्ता ने बयान में कहा कि चूंकि वेदांता समूह धरती माता को एक हितधारक मानता है, इसलिए कंपनी पर्यावरण संरक्षण पर विशेष रूप से ध्यान देगी।

वैष्णव ने थरूर से कहा: रेल परियोजना के वास्ते भूमि अधिग्रहण के लिए जरूरत पड़े तो धरने पर बैठिए

नई दिल्ली/भाषा। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बुधवार को लोकसभा में कांग्रेस सांसद शशि थरूर को केरल में एक रेल परियोजना के लिए जमीन अधिग्रहण के मकसद से धरने पर बैठने की सलाह दी। थरूर के निर्वाचन क्षेत्र तिरुवनंतपुरम में नेमोम रेलवे टर्मिनल परियोजना पर एक सवाल का जवाब देते हुए वैष्णव की टिप्पणी आई। प्रश्नकाल के दौरान, कांग्रेस नेता ने पूरक प्रश्न पूछते हुए परियोजना में देरी और उसके लिए अपर्याप्त धन का उल्लेख किया, जो तिरुवनंतपुरम सेंट्रल स्टेशन के मार्ग को सुलभ बना सकती है।

इसके जवाब में वैष्णव ने कहा कि सरकार का ध्यान यह सुनिश्चित करना है कि बड़े शहरों और जंक्शन पर भीड़ कम हो, नए टर्मिनल बनाए जाएं और उन्हें डिजाइन करने पर बहुत जोर दिया जाए ताकि अगले 50 वर्षों की मांगों और आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। उन्होंने कहा, ''मैं शशि थरूर जी, जो एक बहुत प्रभावशाली सांसद हैं और जिनकी बात पूरा केरल सुनता है, से अनुरोध करूंगा कि अगर जरूरत पड़े तो वह राज्य सरकार के सामने धरने पर बैठ जाएं और सुनिश्चित करें कि भूमि अधिग्रहण हो।''

न्यायालय ने बंगाल के पूर्व मंत्री पार्थ चटर्जी से कहा, पहली नजर में आप भ्रष्ट व्यक्ति हैं

नई दिल्ली/भाषा। उच्चतम न्यायालय ने कथित तौर पर नौकरी देने के बदले नकदी लेने के मामले में गिरफ्तार पश्चिम बंगाल के पूर्व मंत्री पार्थ चटर्जी से बुधवार को कहा, ''पहली नजर में आप भ्रष्ट व्यक्ति हैं। आपके परिसरों से करोड़ों रुपए बरामद हुए हैं।''

न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति उज्ज्वल भुइयां की पीठ ने चटर्जी की जमानत याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रखते हुए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) से उनके लगातार जेल में रहने पर सवाल उठाया और कहा कि उन्हें अनिश्चित काल तक कारागार में नहीं रखा जा सकता। पीठ ने चटर्जी का पक्ष रखने के लिए पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता मुकुल रोहतगी से कहा, ''पहली नजर में आप (चटर्जी) भ्रष्ट व्यक्ति हैं। आपके परिसर से करोड़ों रुपए बरामद हुए। आप समाज को क्या संदेश देना चाहते हैं? भ्रष्ट व्यक्ति को इस तरह जमानत मिल सकती है?''

रोहतगी ने दलील दी कि उनके मुवक्किल को छोड़कर अन्य सभी सह-आरोपियों को मामले में जमानत दे दी गई है, जिनमें सबसे ताजा जमानत एक सप्ताह पहले दी गई है। इस पर पीठ ने कहा, ''हर कोई मंत्री नहीं था, श्रीमान रोहतगी। आप शीर्ष पर थे। आप दूसरों के साथ समानता की मांग नहीं कर सकते। हां, आप जांच में देरी और अभियोजन पक्ष की भूमिका पर सवाल उठा सकते हैं, लेकिन मामले की गुण-दोष पर नहीं।'' ईडी का पक्ष रखने के लिए पेश हुए अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एस.वी. राजू ने दलील दी कि अगर चटर्जी को इस मामले में जमानत मिल जाती है तो भी वह जेल से बाहर नहीं आ पाएंगे, क्योंकि उनके खिलाफ सीबीआई के भी मामले चल रहे हैं।

ओवैसी ने मणिपुर में मादक पदार्थ तस्करी का मुद्दा लोस में उठाया, राज्य में जातीय हिंसा से इसे जोड़ा

नई दिल्ली/भाषा। ऑल इंडिया मजलिस ए मुत्तिहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने मणिपुर में इस साल अफीम जब्त होने का मुद्दा उठाते हुए इसे पूर्वोत्तर राज्य में जातीय हिंसा से जोड़ा। ओवैसी ने शून्यकाल में इस मुद्दे को उठाते हुए दावा किया, ''जुलाई 2022 से जुलाई 2023 के बीच मणिपुर में 1600 करोड़ रुपए मूल्य का अफीम जब्त किया गया।'' ओवैसी ने आरोप लगाया, ''मणिपुर में अवैध तरीके से अफीम की खेती हो रही है। फैक्टरियां पनप गई हैं। इस अफीम को म्यांमा भेजा जाता है और यह वापस मणिपुर आता है।''

'सीएपीएफ और असम राइफल्स में एक लाख से अधिक पद रिक्त'

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। सरकार ने बुधवार को बताया कि केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) और असम राइफल्स (एआर) में एक लाख से अधिक पद रिक्त हैं।

केंद्रीय गृह मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, 30 सितंबर तक सीएपीएफ और असम राइफल्स में कुल तैनात कर्मियों की संख्या 9,48,204 थी। गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने राज्यसभा को एक प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया कि सरकार रिक्तियों को तेजी से भरने के लिए कदम उठा रही है। राय द्वारा उपलब्ध कराए आंकड़ों के अनुसार, पिछले पांच वर्षों में सीएपीएफ और असम राइफल्स में 71,231 नए पद सृजित किए गए हैं। सीएपीएफ और असम राइफल्स में रिक्तियां सेवानिवृत्ति, इस्तीफे, पदोन्नति, मृत्यु, एक नई बटालियन की स्थापना, नए पदों के सृजन आदि के कारण उत्पन्न होती हैं और उन्हें भरना एक सतत प्रक्रिया है। आंकड़ों से पता चलता है सीआरपीएफ में 33,730 रिक्तियों के साथ सीएपीएफ व असम राइफल्स में 1,00,204 पद रिक्त हैं। 30 अक्टूबर तक सीआईएसएफ में 31,782, बीएसएफ में 12,808, आईटीबीपी में 9,861, एसएसबी में 8,646 और एआर में 3,377 जवान कार्यरत थे। गृह राज्य मंत्री ने कहा, ''मंत्रालय यूपीएससी, एसएससी और संबंधित बलों के माध्यम से रिक्तियों को शीघ्रता से भरने के लिए गंभीर कदम उठा रहा है और उठाता रहेगा।''

अदाणी मामले में सच्चाई पर पर्दा डालने का प्रयास किया जा रहा : कांग्रेस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस ने मंगलवार को कहा कि अदाणी समूह से जुड़े मामले पर पर्दा डालने का प्रयास किया जा रहा है, जबकि इस 'महाघोटाले' में दंडात्मक कार्रवाई होनी चाहिए। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह भी कहा कि उद्योगपति गौतम अदाणी की गिरफ्तारी होनी चाहिए।

रमेश ने एक बयान में कहा, ''सच्चाई पर पर्दा डालने की तैयारी चल रही है। इसका एक स्पष्ट संकेत ऐसी खबरें हैं कि अदाणी समूह से जुड़ी अपारदर्शी 'ऑफशोर' संस्थाएं और लोगों ने टोकन राशि के लिए प्रतिभूति कानूनों के उल्लंघन के गंभीर आरोपों को निपटाने की पेशकश की है।

इनमें कथित तौर पर चार कंपनियों - अदाणी एंटरप्राइजेज, अदाणी पावर, अदाणी एनर्जी सॉल्यूशंस और अदाणी पोर्ट्स एंड एसईजेड में निवेश शामिल है।'' उन्होंने दावा किया कि वैसे तो कोई भी समझौता अपराध का प्रमाण है, लेकिन यह मामला स्पष्ट रूप से प्रधानमंत्री के आशीर्वाद से उन्हें छूट मिलने का है।

रमेश ने कहा, ''अदाणी महाघोटाले में गंभीर दंडात्मक कार्रवाई होनी चाहिए, जांच एजेंसियों द्वारा गिरफ़्तारी और छापे भी डाले जाने चाहिए। हम सेबी से इन संस्थाओं के ख़िलाफ़ सख्त कार्रवाई करने का आग्रह करते हैं।'' उन्होंने कहा, ''चिंता की दूसरी वजह सेबी प्रमुख माधवी पुरी बुच के हितों का टकराव है, जिन्होंने ख़ुद उन अपारदर्शी 'ऑफशोर फंड' में निवेश किया था, जिन पर बेनामी निवेश के माध्यम से इन कानूनों के उल्लंघन का आरोप है। इस्तीफ़ा देने या हटाए जाने की बात तो दूर, वह अब उन लोगों के साथ समझौता करने की स्थिति में हैं जिन्हें वह हमेशा बचाती रही हैं।''

रमेश ने दावा किया कि 'टोकन सेटलमेंट' उन भारतीय संस्थाओं के लिए मज़ाक बन जाएगा जिनकी प्रतिष्ठा पहले से ही प्रधानमंत्री और उनके मित्रों के कार्यों से कलंकित हो चुकी है।

रिश्वतखोरी और धोखाधड़ी के आरोपों में अदाणी समूह के प्रमुख गौतम अदाणी और कंपनी के अन्य अधिकारियों पर अमेरिकी अभियोजकों द्वारा अभियोग लगाए जाने के बाद कांग्रेस और कुछ अन्य विपक्षी दल संयुक्त संसदीय समिति से आरोपों की जांच कराए जाने की मांग कर रहे हैं।

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने हाल ही में इस मामले को लेकर उद्योगपति गौतम अदाणी की तत्काल गिरफ्तारी की मांग की थी।

अदाणी समूह ने सभी आरोपों को आधारहीन बताया है।

स्टोक्स ने आईसीसी की ओवर रेट गणना पर सवाल उठाया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

वेलिंग्टन/भाषा। इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने पिछले साल लॉर्ड्स में एशेज टेस्ट के बाद से ओवर रेट शीट पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं क्योंकि वह इसके आंकलन के बारे में अपनी चिंताओं को लेकर आईसीसी (अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) के साथ बातचीत करने का इंतजार कर रहे हैं।

इस मामले पर स्टोक्स की हालिया टिप्पणी तब आई जब क्राइस्टचर्च में पहले टेस्ट के दौरान धीमी ओवर गति बनाए रखने के लिए इंग्लैंड और न्यूजीलैंड दोनों पर विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की तालिका में तीन-तीन अंक का जुर्माना लगाया गया। 'ईएसपीएनक्रिकइंफो' के हवाले से स्टोक्स ने ओवर गति के जुर्माने पर कहा, ''दोनों टीमों के दृष्टिकोण से सबसे निराशाजनक बात यह है कि यह मैच समय से पहले खत्म हुआ और इसका स्पष्ट परिणाम भी निकला। मुझे हालांकि लगता है कि निराशा वास्तव में पिछले साल एशेज में हुई थी, जब मैंने पहली बार मैच रेफरी और अंपायरों के सामने इस मुद्दे को उठाया था।'' इस हरफनमौला ने कहा, ''मुझे लगता है कि सबसे निराशाजनक बात यह है कि यह हमेशा एक मुद्दा होता है जो इस बात पर निर्भर करता है कि आप दुनिया में कहां हैं और क्रिकेट की शैली क्या है। एशिया में ओवर-रेट कभी भी समस्या नहीं होती है क्योंकि वहां स्पिन गेंदबाजी ज्यादा होती है।'' स्टोक्स ने आईसीसी द्वारा जुर्माना लगाए जाने वाले सोशल मीडिया पोस्ट पर व्यंग्यात्मक इमोजी पोस्ट की थी। उन्होंने कहा, ''आपको कई रणनीतिक फैसले लेने होते हैं, चाहे वह गेंदबाज से बात करना हो या क्षेत्ररक्षण में बदलाव करना हो।''

स्टोक्स ने पिछले साल एशेज टेस्ट के बाद से ओवर रेट शीट पर हस्ताक्षर नहीं किया है। उन्होंने अपने इस फैसले का बचाव करते हुए कहा, ''एक कप्तान के तौर पर, मैं चीजों को काफी बदलना पसंद करता हूं और एक ओवर में छह गेंदों पर क्षेत्ररक्षण पूरी तरह से अलग हो सकती है। इन चीजों पर हालांकि ध्यान नहीं दिया जाता है। 'जल्दी करो' कहने से इस समस्या का हल नहीं होगा, हम कहां खेल रहे हैं इस पर ध्यान देना होगा।''

गुलाबी गेंद को गेंदबाज के हाथ से समझना चुनौतीपूर्ण: राहुल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

एडिलेड/भाषा। अपने पहले दिन-रात्रि टेस्ट की तैयारी कर रहे भारत के अनुभवी बल्लेबाज लोकेश राहुल यह परखने में सफल रहे हैं कि गुलाबी कूकाबुरा गेंद तेज गति से आती है, क्षेत्ररक्षण करते समय हाथों पर अधिक जोर से लगती है और गेंदबाज के हाथ से इसे समझना काफी मुश्किल है।

बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के पहले टेस्ट मैच की दूसरी पारी में 77 रन बनाकर टीम को 295 रन से जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाने वाले राहुल गुलाबी गेंद से अभ्यास सत्र के दौरान अधिक से अधिक सीखने की कोशिश कर रहे हैं। अब तक के अपने करियर में 54 टेस्ट में 3000 से अधिक रन बनाने वाले राहुल ने कहा, '' क्षेत्ररक्षण के समय भी यह गेंद लाल गेंद के मुकाबले अधिक ठोस लगती है। ऐसा लगता है जैसे गेंद थोड़ी तेज गति से हाथ में आ रही है और अधिक ठोस है। पांच मैचों की श्रृंखला का दूसरा टेस्ट एडिलेड में शुक्रवार से खेला जायेगा। उन्होंने कहा, '' बल्लेबाजी के दौरान भी ऐसा ही है। लगता है कि यह गेंद लाल गेंद की तुलना में अधिक गति से आ रही है और सीम से अधिक मदद हासिल कर रही है।'' उन्होंने कहा, '' हम इस चुनौती का इंतजार कर रहे हैं। यह मेरा पहला गुलाबी गेंद वाला मैच है इसलिए मैं मैदान में पहुंच कर असल चुनौती का सामना करना चाहूंगा।'' राहुल ने कहा, '' आप अगर गुलाबी गेंद को देखें तो इसकी चमक जल्दी खत्म नहीं होती है इससे तेज गेंदबाजों को मदद मिलेगी।''

पंत ने टेस्ट क्रिकेट को आसानी से अपना लिया : द्रविड़

मुंबई/भाषा। पूर्व मुख्य कोच राहुल द्रविड़ का मानना है कि भारतीय क्रिकेट टीम में महेंद्र सिंह धोनी के संन्यास से पैदा हुई कमी को ऋषभ पंत ने तुरंत भर दिया जिन्होंने टेस्ट क्रिकेट को ऐसे अपनाया जैसे 'बत्तख पानी को अपनाती' है। दिसंबर 2022 में कार दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हुए आक्रामक विकेटकीपर बल्लेबाज पंत ने गाबा में चौथे टेस्ट में 89 रन की मैच विजयी पारी खेली और श्रृंखला में 274 रन बनाकर 2020-21 में ऑस्ट्रेलिया दौरे पर भारत की 2-1 की जीत में अहम भूमिका निभाई। द्रविड़ ने स्टार स्पोर्ट्स से कहा, ''धोनी के जाने के बाद आपको लगा होगा कि शायद किसी को भी उसकी जगह लेने में समय लगेगा।'' उन्होंने कहा, ''मैं यह नहीं कह रहा कि उसने उनकी जगह ले ली है लेकिन निश्चित रूप से टेस्ट क्रिकेट में उसका प्रदर्शन शानदार रहा है, अविश्वसनीय प्रदर्शन।''

सुविचार

कचरे में फेंकी रोटियां रोज ये बयां करती है कि पेट भरते ही लोग अपनी हैसियत भूल जाते है।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

सरहद पार से साजिश?

उत्तर प्रदेश के संभल में जामा मस्जिद-हरिहर मंदिर सर्वेक्षण संबंधी विवाद के दौरान भड़की हिंसा के बाद पाकिस्तान निर्मित कारतूस बरामद होने का पुलिस का दावा चौंकाता है। यह कोई सामान्य घटना नहीं है। असामाजिक तत्त्व, उपद्रवी आदि पहले भी हिंसा के दौरान कारतूसों का इस्तेमाल करते रहे हैं, लेकिन वे 'स्थानीय' होते हैं। अगर सरहद पार से ऐसी सामग्री आती है तो यह निश्चित रूप से खतरे की घंटी है। पाकिस्तान हमेशा भारत का अहित चाहता है। वह आतंकवादियों को प्रशिक्षण, हथियार और विस्फोटक सामग्री देकर भारत भेजता रहता है। ऐसे ज्यादातर आतंकवादी मुठभेड़ों में मारे जाते हैं। भारतीय खुफिया एजेंसियां उनका पता लगाने के लिए मुस्तैद रहती हैं, लेकिन कोई भी प्रणाली 100 प्रतिशत कारगर नहीं हो सकती। अगर पाकिस्तानी कारतूस भारत भेजे गए होंगे तो उन्हें कौन लेकर आया होगा? निश्चित रूप से ऐसी चीजें या तो कोई आतंकवादी लेकर आ सकता है या तस्कर 'मदद' कर सकते हैं। किसी आतंकवादी द्वारा कारतूस लेकर उन्हें यहां तक पहुंचाना आसान नहीं है, तो असंभव भी नहीं है। एलओसी के रास्ते वर्षों से आतंकवादी आते रहे हैं। हो सकता है कि कोई आतंकवादी उस समय भारतीय सुरक्षा बलों के हत्थे नहीं चढ़ा। उसने बाद में अपने किसी मददगार के हाथ उन्हें इधर पहुंचा दिया। हालांकि इस रास्ते में जोखिम बहुत ज्यादा है। यहां से आने वाले ज्यादातर आतंकवादी देर-सबेर ढेर हो ही जाते हैं। वहीं, बांग्लादेश और नेपाल में पाकिस्तान के लिए काम करने वाले तस्कर बहुत सक्रिय हैं।

जिस तरह आतंकवादी अपनी गतिविधियों के संचालन के लिए नेटवर्क खड़ा करते हैं, उसी तरह तस्करों का काम भी नेटवर्क से चलता है। ऐसे में उक्त मामले की गहराई से जांच होने पर ही असली गुनहगारों के साथ उनके मददगार बेनकाब हो सकते हैं। संभल के पुलिस अधीक्षक कृष्ण कुमार विश्नोई के इस बयान के गहरे निहितार्थ हैं कि ये कारतूस 'पाकिस्तान ऑर्डिनेंस' में बने हुए हैं। इन कारखानों में बनने वाली सामग्री पर पाक सरकार और फौज की कड़ी नजर होती है। वहां कार्यरत कर्मचारी स्वेच्छा से कोई चीज बाहर लेकर नहीं जा सकते। ये कारखाने गोलियां, बम और अत्यंत घातक विस्फोटक सामग्री तैयार करते हैं, जिनका इस्तेमाल पाकिस्तानी फौज और अन्य सुरक्षाबलों द्वारा किया जाता है। अगर संभल में इस्तेमाल हुए कारतूसों का संबंध 'पाकिस्तान ऑर्डिनेंस' से है तो इसका साफ मतलब है कि ये वहां की सरकार और फौज की इजाजत से ही यहां आए हैं। इसमें आतंकवादियों या तस्करों ने अपनी भूमिका निभाई होगी, लेकिन वे सिर्फ माध्यम थे। पाकिस्तान में हथियार एवं विस्फोटक सामग्री निर्माण से संबंधित कारखानों में मामूली घुसपैठियों, आतंकवादियों, तस्करों आदि को सीधे प्रवेश की अनुमति नहीं होती है। आईएसआई या फौज के वरिष्ठ अधिकारी उनके आकाओं से संपर्क करते हैं। उसके बाद 'निचले स्तर' पर चीजें पहुंचाई जाती हैं। हाल के वर्षों में उत्तर प्रदेश एटीएस ने काफी संख्या में ऐसे लोगों को गिरफ्तार किया है, जिन पर आईएसआई के लिए जासूसी करने का आरोप है। उनमें से कुछ लोग ऐसे भी थे, जो आईएसआई को सैन्य महत्त्व से जुड़े स्थानों के अलावा धार्मिक स्थानों की तस्वीरें भी भेजा करते थे। निश्चित रूप से ये दोनों स्थान देश की सुरक्षा एवं आस्था की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। वहां उपद्रवी तत्त्वों के पास घातक सामग्री पहुंचना कई समस्याएं खड़ी कर सकता है। उम्मीद है कि भारतीय एजेंसियां हर कोण से जांच कर शांति व भाईचारे के शत्रुओं का पर्दाफाश करेंगी।

ट्वीटर टॉक

प्रधानमंत्री ने राजस्थान विधानसभा उपचुनाव में भाजपा की ऐतिहासिक सफलता पर टीम भाजपा राजस्थान को अपनी शुभकामनाएं और आशीर्वाद प्रदान किया। प्रधानमंत्री जी का मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मुझे जनसेवा और संगठन को और सशक्त बनाने की प्रेरणा देता है।

-मदन राठौड़

इस विशेष दिवस पर देश की जल सीमाओं के सजग प्रहरी, अदम्य साहस और निष्ठा से राष्ट्रसेवा में समर्पित भारतीय नौसेना के वीर जवानों को नमन करती हूँ। आपकी वीरता एवं समर्पण ने देश की समुद्री सीमाओं को सदैव सुरक्षित रखा है।

-वसुंधरा राजे

सरदार शहर में हुई भीषण सड़क दुर्घटना में हुई जनहानि का समाचार सुनकर मन अत्यंत दुखी है। जिला प्रशासन के अधिकारियों को घायल नागरिकों के त्वरित चिकित्सीय उपचार सुनिश्चित करने हेतु उचित दिशा-निर्देश दिए गए हैं।

-भजनलाल शर्मा

प्रेरक प्रसंग

मातृभूमि की सुगंध

भगवान श्रीराम ने लक्ष्मण जी को आदेश दिया कि लंका जाकर विभीषण का राजतिलक संपन्न कराओ। लक्ष्मण लंका पहुंचे तो स्वर्णनगरी की अनूठी शोभा तथा चमक-दमक ने उन्हें मोह लिया। लंका की वाटिका के तरह-तरह के सुगंधित पुष्पों को वह काफी समय तक निहारते रहे। विभीषण का विधिपूर्वक राज-तिलक संपन्न कराने के बाद वे श्रीराम के पास लौट आए। उन्होंने श्रीराम के चरण दबाते हुए कहा, 'महाराज लंका तो अत्यंत दिव्य सुंदर नगरी है। मन चाहता है कि मैं कुछ समय के लिए लंका में निवास करूं। आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा है।' श्रीराम लक्ष्मण का लंका नगरी के प्रति आकर्षक देखकर बोले, 'लक्ष्मण यह ठीक है कि लंका सचमुच स्वर्गपुरी के समान आकर्षक है, प्राकृतिक सुषमा से भरपूर है, किंतु यह ध्यान रखना कि अपनी मातृभूमि अयोध्या तो तीनों लोकों से कहीं अधिक सुंदर है। जहां मानव जन्म लेता है, वहां की मिट्टी की सुगंध की किसी से तुलना नहीं की जा सकती है।' लक्ष्मण अपनी जन्मभूमि अयोध्या के महत्व को समझ गए। उन्होंने कहा 'प्रभु वास्तव में हमारी अयोध्या तीनों लोकों से न्यारी है।'

सामयिक

वाहनों की पार्किंग के संकट से जूझते शहर

डॉ सत्यवान सौरभ

मोबाइल : 9466526148

भारत में वाहन पार्किंग की समस्या एक जटिल मुद्दा है जिसके लिए बहुआयामी ष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें शहरी नियोजन, नीति सुधार, तकनीकी नवाचार और सांस्कृतिक परिवर्तन शामिल हैं। इस चुनौती से सीधे निपटकर, भारत अपनी शहरी गतिशीलता को बढ़ा सकता है, अपने नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकता है और टिकाऊ शहरी विकास के लिए एक मिसाल क़ायम कर सकता है।

भारत में वाहन पार्किंग की समस्या एक महत्त्वपूर्ण शहरी चुनौती है, जो न केवल यातायात के प्रवाह को प्रभावित करती है, बल्कि शहरी जीवन के मूल ढांचे को भी प्रभावित करती है। यह समस्या, तेजी से बढ़ते शहरीकरण, बढ़ते वाहन स्वामित्व और पुरानी शहरी नियोजन के संयोजन से उत्पन्न होती है, जो महानगरीय क्षेत्रों में यातायात प्रबंधन, शहरी नियोजन और जीवन की गुणवत्ता के लिए एक जटिल दुविधा पैदा करती है। शहरों के विस्तार और कार स्वामित्व के अधिक सुलभ होने के साथ, भारतीय शहरी केन्द्रों को वाहनों की बढ़ती संख्या को समायोजित करने में संघर्ष करना पड़ रहा है। पर्याप्त पार्किंग इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी और आज के समय में वाहनों की संख्या के हिसाब से शहरों को डिज़ाइन न किए जाने के कारण बड़े पैमाने पर अवैध पार्किंग होती है। इससे न केवल सड़कें जाम होती हैं, बल्कि पैदल चलने वालों के लिए बनी जगह भी कम पड़ जाती है। कई भारतीय शहरों की स्थापना प्राचीन या औपनिवेशिक काल में हुई थी, लेकिन उनकी योजना आधुनिक यातायात की मांग को ध्यान में रखकर नहीं बनाई गई थी। संकरी गलियाँ और मिश्रित भूमि उपयोग के कारण पार्क किए गए और चलते वाहनों के भार से दबाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, पार्किंग नियमों का ढीला-ढाला क्रियान्वयन तथा गैर-अनुपालन के प्रति सांस्कृतिक प्रवृत्ति स्थिति को और बिगाड़ देती है, जिससे शहरी स्थान अव्यवस्थित हो जाते हैं।

पार्किंग की समस्या का सीधा परिणाम गंभीर यातायात भीड़ है, जिसके कारण यात्रा का समय बढ़ जाता है, प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है, तथा शहरी जीवन की गुणवत्ता में गिरावट आती है। पैदल चलने वालों को विशेष रूप से परेशानी होती है, क्योंकि पार्क किए गए वाहन अक्सर पैदल चलने के रास्तों पर अतिक्रमण कर लेते हैं, जिससे उन्हें मजबूरन सड़कों पर आना पड़ता है और उनकी सुरक्षा से समझौता होता है। आर्थिक दृष्टि से, पार्किंग की कमी स्थानीय व्यवसायों को प्रभावित करती है, क्योंकि भीड़भाड़ वाली सड़कें ग्राहकों को आकर्षित नहीं करती हैं। पार्किंग स्थल की उच्च मांग से अचल संपत्ति की लागत भी बढ़ जाती है, जिससे हरित स्थलों की क़ीमत पर पार्किंग अवसंरचना के विकास को बढ़ावा मिलने से शहरी विस्तार और पर्यावरण क्षरण को बढ़ावा मिलता है। भारत में मोटर वाहनों से सम्बंधित मामले केंद्र और राज्य दोनों के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। हालांकि भारत के शहरों के लिए वाहनों की बढ़ती भीड़ एक उभरती हुई समस्या है, लेकिन ऑटोमोबाइल उद्योग पर प्रतिबंध लगने की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि इसकी आर्थिक और रोज़गार देने की क्षमता काफ़ी ठीक है और यह भारत के लिए महत्त्वपूर्ण है। सभी पांच शहरों की पार्किंग नीतियाँ कुछ महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर सहमत होती दिखती हैं। वे इस बात पर एकमत हैं कि पार्किंग मुफ़्त नहीं हो सकती और जहाँ भी सार्वजनिक स्थान का उपयोग किया जाता है, वहाँ शुल्क लिया जाना चाहिए क्योंकि 'मुफ़्त पार्किंग' की अवधारणा टिकाऊ नहीं है।

पार्किंग समस्या के समाधान के लिए एक व्यापक रणनीति की आवश्यकता है जिसमें पर्याप्त पार्किंग अवसंरचना का विकास, स्मार्ट पार्किंग प्रौद्योगिकियों को अपनाना और पार्किंग विनियमों का प्रवर्तन शामिल हो। उदाहरण के लिए, पार्किंग क्षेत्रों को परिभाषित करना और वाहन पहचान सेंसर और स्वचालित लाइसेंस प्लेट पहचान जैसी तकनीक का उपयोग करके पार्किंग प्रबंधन को सुव्यवस्थित किया जा सकता है। इसके अलावा, भूमि मूल्य और भीड़भाड़ के आधार पर पार्किंग शुल्क को समायोजित करके भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में अनावश्यक वाहन उपयोग को हतोत्साहित किया जा सकता है। बुनियादी ढांचे के समाधान के अलावा, सार्वजनिक परिवहन और टिकाऊ शहरी गतिशीलता प्रथाओं को बढ़ावा देने से पार्किंग दबाव कम हो सकता है। सार्वजनिक परिवहन, साइकिल और पैदल चलने के उपयोग को प्रोत्साहित करने से निजी वाहनों पर निर्भरता कम हो सकती है, जिससे पार्किंग स्थलों की मांग कम हो सकती है। यह ज़रूरी नहीं है कि अच्छा सार्वजनिक परिवहन यातायात की भीड़ को काफ़ी कम कर दे। भीड़भाड़ की स्थिति में सुधार करने के लिए, शहरों को निजी कारों के स्वामित्व और उपयोग के कार्यात्मक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक मूल्यों को लक्षित करने वाली गतिविधियों के साथ ही अपनी सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों को बेहतर बनाने के प्रयासों को मिलाकर काम करना होगा।

भारत में वाहन पार्किंग की समस्या एक जटिल मुद्दा है जिसके लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें शहरी नियोजन, नीति सुधार, तकनीकी नवाचार और सांस्कृतिक परिवर्तन शामिल हैं। इस चुनौती से सीधे निपटकर, भारत अपनी शहरी गतिशीलता को बढ़ा सकता है, अपने नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकता है और टिकाऊ शहरी विकास के लिए एक मिसाल क़ायम कर सकता है। आगे का रास्ता सरकार, निजी क्षेत्र और जनता के बीच बेहतर शहरी स्थानों की पुनर्कल्पना और पुनर्निर्माण के लिए सहयोगात्मक प्रयासों में निहित है।

ज्ञान विज्ञान

क्या प्लैनेट-9 का अस्तित्व है? नासा का नया टेलीस्कोप सुलझाएगा सौर मंडल का सबसे बड़ा रहस्य

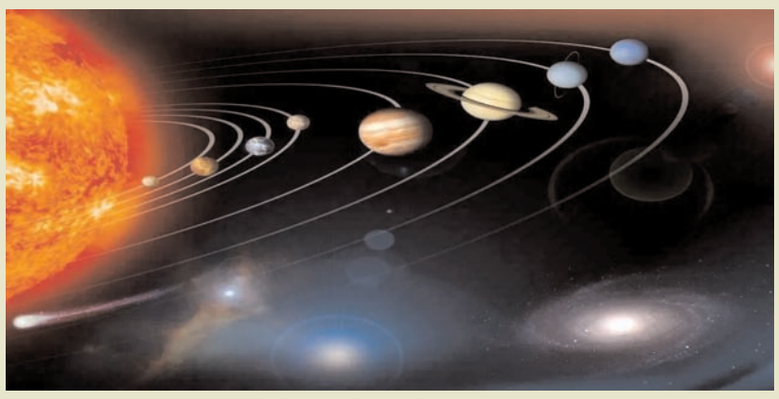

सौरमंडल में कुल 8 ग्रह (प्लैनेट) हैं। वैज्ञानिक पहले प्लूटो को भी पूर्ण ग्रह मानते थे, लेकिन कुछ सालों पहले उन्होंने उसे डार्फ प्लैनेट की श्रेणी में कर दिया। इससे अलावा अब एक बड़े ग्रह के होने का दावा वैज्ञानिक कर रहे हैं जो सौरमंडल का नौंवा ग्रह बताया जा रहा है। सौरमंडल में तमाम ऐसे रहस्य आज भी हैं, जहां तक अभी साइंस पहुंच नहीं सका है। हालांकि वैज्ञानिक लगातार नई जानकारियां जुटाने के लिए रिसर्च कर रहे हैं। वहीं पिछले एक दशक से वैज्ञानिक सौरमंडल के नौवें ग्रह का दावा कर रहे हैं। जानकारी के मुताबिक यह ग्रह नेप्च्यून के आगे काइपर बेल्ट में मौजूद है। इसे प्लैनेट 9 या प्लैनेट द कहा जा रहा हैं। हालांकि अभी तक इसको प्रमाणित नहीं किया जा सका है कि यह ग्रह है भी या नहीं।

रअसल वैज्ञानिकों ने प्लैनेट 9 के अस्तित्व पर लंबे समय से बहस की है। लेकिन अब इसके होने या न होने के प्रमाण मिलने की उम्मीद बढ़ गई है। इसका कारण नासा की वेधशाला है, खगोलविदों (एस्ट्रोनॉमर्स) को उम्मीद है कि यहां का टेलीस्कोप प्लैनेट 9 के अस्तित्व की पुष्टि या खंडन करने के लिए निश्चित सबूत प्रदान करेगी।

दरअसल एस्ट्रोनॉमर्स ने हमारे सौर मंडल के सुदूर इलाकों में नेपच्यून से परे छिपे एक रहस्यमय प्लैनेट 9 के संभावित अस्तित्व के बारे में अनुमान लगाया है। काल्पनिक रूप से, यह ग्रह एक सुपर-अर्थ है, जिसका द्रव्यमान (मास) हमारे ग्रह से पांच से सात गुना अधिक होने का अनुमान है, जो हर 10,000 से 20,000 साल में एक बार सूर्य की परिक्रमा करता है।

कई अध्ययनों के बावजूद, प्लैनेट 9 की खोज बहस का विषय बनी हुई है। जहां कुछ वैज्ञानिक इसकी उपस्थिति के प्रति आश्वस्त हैं, वहीं अन्य संशय में हैं। वर्षों से, शोधकर्ताओं ने इस ग्रह का पता लगाने के अपने प्रयासों में कई टेलीस्कोप का इस्तेमाल किया है। हालांकि अभी तक इसका निश्चित प्रमाण सामने नहीं आया है।

हालांकि, यह जल्द ही वेरा सी। रुबिन वेधशाला के साथ बदल सकता है, जो 2025 के अंत में चिली में ऑपरेशन शुरू करने के लिए एक अभूतपूर्व टेलीस्कोप है। कुछ दिनों में आकाश का सर्वे करने की क्षमता के साथ, यह वेधशाला किसी भी पुष्टि के लिए अभी तक का सबसे अच्छा मौका दे सकती है कि प्लैनेट 9 के अस्तित्व को माने या खारिज करें।

प्लैनेट 9 की खोज सौर मंडल और ग्रहों के निर्माण के पीछे की प्रक्रियाओं के बारे में हमारी समझ को नया आकार देगी। इसके विपरीत, यदि ग्रह का कोई निशान नहीं मिलता है, तो यह दूर काइपर बेल्ट वस्तुओं की असामान्य कक्षाओं के बारे में मौजूदा सिद्धांतों को चुनौती देगा। परिणाम चाहे जो भी हो, एस्ट्रोनॉमर्स इस बात से सहमत हैं कि आगामी अवलोकन हमें सौर मंडल के सबसे मनोरम रहस्यों में से एक को सुलझाने के करीब लाएंगे।

बता दें कि हमारे सौरमंडल में कुल 8 ग्रह (प्लैनेट) हैं। वैज्ञानिक पहले प्लूटो को भी पूर्ण ग्रह मानते थे, लेकिन कुछ सालों पहले उन्होंने उसे डार्फ प्लैनेट की श्रेणी में कर दिया। इससे अलावा अब एक बड़े ग्रह के होने का दावा वैज्ञानिक कर रहे हैं जो सौरमंडल का नौंवा ग्रह बताया जा रहा है। इसीलिए इसे प्लैनेट 9 कहा जा रहा है।

नजरिया

क्या पाकिस्तान में फिर होगा विभाजन?

संजीव ठाकुर

मोबाइल : 9009 415 415

पाकिस्तान सरकार को पाक अधिकृत कश्मीर और बलूचिस्तान में जबरदस्त विरोध का सामना करना पड़ रहा है। वहां की आवाम अब किसी भी परिस्थिति में पाकिस्तान सरकार को बर्दाश्त करने की स्थिति और मनःस्थिति में नहीं हैं। दोनों प्रदेशों से बगावत के स्वर खुलकर सुनाई देने लगे हैं पाक अधिकृत कश्मीर की जनता भारत देश में शामिल होने को एक पैर पर तैयार है। ऐसा नहीं है कि भारत इन दोनों प्रदेशों को आजाद करवाने की कोशिश कर रहा है बल्कि वहां की जनता स्वयं स्फूर्त होकर पाकिस्तान से इन प्रदेशों को अलग करवाएगी। पाकिस्तान में बड़ी विचित्र स्थिति बन गई है खुद के पास देश चलाने के लिए पैसा नहीं है और वह बांग्लादेश में अपनी सेना भेज कर हिंदुओं के विरुद्ध अभियान चलाने में लगा हुआ है। कई आतंकवादी संगठन आप बांग्लादेश में भारत के विरोध में सक्रिय हो गए हैं और दंगे भड़काने में सक्रिय हो गए हैं।

भारत और पाकिस्तान दोनों अंग्रेजों की दासता से 1947 में स्वतंत्र हुए थे। दोनों देश विकास की धारणाएं अलग-अलग बनाकर आगे बढ़े थे। भारत विकास और शांति के सोपानों में निरंतर आगे बढा, पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत ने पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत नए-नए कल कारखाने और कृषि को प्राथमिकता देते हुए आत्मनिर्भर होने का प्रयास किया गया, और काफी हद तक सफल भी रहा है। पाकिस्तान ने विकास की जगह भारत को सदैव नीचा दिखाने का प्रयास किया, विकास के नाम पर वहां केवल युद्ध और हिंसा को प्राथमिकता दी गई। पाकिस्तान के इतिहास में 18 प्रधानमंत्री ने कभी अपना 5 साल का कार्यकाल पूरा नहीं किया। प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो को विभिन्न आरोप लगाकर फांसी की सजा दे दी थी। उसके बाद उनकी पुत्री बेनजीर भुट्टो की हत्या करवा दी गई, नवाज शरीफ पर विभिन्न आरोप लगाकर लंदन में जाकर बसने को मजबूर कर दिया गया। इमरान खान को भी विभिन्न अपराधों की सजा अब मिलने वाली है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ से पूरा देश नियंत्रण से बाहर है। इमरान खान की गिरफ्तारी ने जनता और सेना को आमने सामने खड़ा कर दिया गया और 9 मई को जो अराजक तत्वों ने सरकारी इमारतों की तोड़फोड़ की उसका सारा आरोप इमरान खान पर लगाते हुए उन्हें एक बार गिरफ्तार भी कर लिया गया था पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर उन्हें छोड़ दिया गया। अब स्थिति यह है कि पाकिस्तान मैं आवाम को रोटी, चावल और पेट्रोल, गैस जैसी जरूरी चीजों के लिए तरसना पड़ रहा है पाकिस्तान में अभी गृह युद्ध जैसे हालात पैदा हो गए हैं। पाकिस्तान की सेना के जनरल मुनीर पाकिस्तान में मार्शल लगाने की तैयारी में और इमरान शान को पूरी तरह नेस्तनाबूद करने में लगे हुए हैं। इमरान खान के सभी बड़े समर्थक नेता पार्टी छोड़कर भाग चुके हैं। 7000 इमरान समर्थक लोगों को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया है। महंगाई बेरोजगारी और अराजकता पाकिस्तान में चरम सीमा पर है। प्रधानमंत्री शरीफ के पास देश को बचाने के लिए धनराशि भी नहीं है और इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड, सऊदी अरेबिया, चीन ने पाकिस्तान की मदद करने से हाथ ऊपर खड़े कर लिए हैं। पाकिस्तान में गृह युद्ध की आशंका को इनकार नहीं किया जा सकता, ऐसे में पाकिस्तान में 1971 की तरह बांग्लादेश के निर्माण की कथा व्यथा और इतिहास को दोहराने की संभावना दिखाई दे रही है।

1971 में बांग्लादेश के बंगबंधु मुजीब उर रहमान ने गृह युद्ध की घोषणा कर भारत की मदद से पाकिस्तानी सेना का सामना कर पाकिस्तान को मजबूर कर दिया था और पाकिस्तानी सेना के 83000 जवानों ने जनरल नियाजी के नेतृत्व में भारत के जनरल अरोड़ा के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था। और इस तरह बांग्लादेश का पृथक से निर्माण हो पाया था। अब किसी तरह भी पाकिस्तान में फिर से गृह युद्ध होता है और मार्शल ला लगाया जाता है तो सिंध, बलूचिस्तान के अलग होने की पूरी संभावना बन रही हैं वहां भी जनता पूरी तरह गृह युद्ध के तेवर में दिखाई देने लगी है। यदि ऐसा होता है तो पाकिस्तान के टुकड़े होने से कोई रोक नहीं सकता और इमरान खान को ही जेल में डाला जा सकता है। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान पर 121 मुकदमा चलाए जा रहे हैं इसी तरह उनकी पत्नी बुशरा बेगम पर भी आरोप लगाकर उन्हें जेल भेजने की तैयारी है। वैसे तो यह पाकिस्तान का इतिहास ही है कि कोई भी प्रधानमंत्री बेदाग प्रधानमंत्री पद नहीं छोड़ पाया है। यदि इमरान खान को सजा देकर उन्हें गिरफ्तार किया जाता है तो स्थिति बड़ी विस्फोटक हो जाएगी और पाकिस्तान की आवाम विद्रोह पर आने के लिए अमादा है। दूसरी तरफ उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान ने आम जनता को दाल रोटी और चावल की कमी के कारण भूखमरी के हालात बन गए हैं पाकिस्तान के वर्तमान प्रधानमंत्री के सामने कई क्षेत्रों से चुनौतियां सामने आ रही हैं वह अपनी आवाम को खाना खिलाए या अपनी पुरानी उधारी का कर्ज कई देशों को वापस करें या फिर अपनी सेना को मार्शल ला लगाने से रोकें, शहबाज शरीफ अब पूरी तरह से लाचार दिखाई दे रहे हैं।

उपरोक्त परिस्थितियों में पाकिस्तान का कोई भविष्य नजर नहीं आता है पाकिस्तान को वर्तमान स्थिति से उबरने के लिए आगामी 10 से 20 साल लग सकते हैं और यदि मार्शल ला लगता है तो निश्चित तौर पर पाकिस्तान के टुकड़े होने से पाकिस्तान रोक नहीं सकता है। पाकिस्तान के टुकड़े होने और वहां गृह युद्ध होने से उसे कोई चमत्कार ही बचा सकता है।

महत्त्वपूर्ण

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006. Editor : Bhupendra Kumar (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar. Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any suchmanner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.**Regn No.RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520**

पाठकों से अनुरोध है कि इस प्रकाशन में प्रकाशित किए जाने वाले किसी भी तरह के विज्ञापन (वैवाहिक, वर्गीकृत, टेंड़र एवं सजावटी इत्यादि) पर कोई भी कार्यवाही, प्रतिबद्धता या धनराशि का व्यय करने से पूर्व इन विज्ञापनों के बारे में समस्त जानकारी वह स्वयं प्राप्त कर लें। दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह उत्पादों की गुणवत्ता तथा सेवाओं के लिए विज्ञापनदाताओं द्वारा किए जा रहे किसी प्रकार के दावों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अगर विज्ञापनदाता विज्ञापन में किया जा रहा दावा पूरा नहीं करता है तो दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक या मालिकान को पाठक किसी भी रूप में उत्तरदाई नहीं बना सकता।- **दक्षिण भारत राष्ट्रमत**

धैर्य, पार्टी नेतृत्व के प्रति निष्ठा और रणनीतिक कौशल के बलबूते हुई फडणवीस की 'ताजपोशी'

मुंबई/भाषा

साधारण पृष्ठभूमि से उठकर महाराष्ट्र की राजनीति में अपना लोहा मनवाने वाले दिग्गज भाजपा नेता देवेंद्र फडणवीस एक बार फिर मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं। वह इससे पहले भी दो बार इस पद पर रह चुके हैं।

बीस नवंबर के विधानसभा चुनाव में भाजपा के निर्णायक प्रदर्शन के बाद 54 वर्षीय फडणवीस को बुधवार को राज्य भाजपा विधायक दल का नेता चुना गया। इसी के साथ उनके तीसरी बार राज्य की बागड़ोर संभालने की राह तैयार हो गई।

फडणवीस की राजनीतिक यात्रा उल्लेखनीय रही है। इस दौरान एक गुमनाम पार्षद से लेकर नागपुर के सबसे युवा महापौर बनने का गौरव हासिल किया। इसके बाद उन्होंने भाजपा के भीतर एक प्रमुख नेता के रूप में अपनी स्थिति मजबूत की है। उल्लेखनीय बात यह है कि वह शिवसेना के मनोहर जोशी के बाद महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बनने वाले दूसरे ब्राह्मण हैं। फडणवीस का राजनीतिक उत्थान 2014 के विधानसभा चुनावों से पहले शुरू हुआ, जब उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और वरिष्ठ भाजपा नेता अमित शाह का समर्थन हासिल किया। मोदी ने एक चुनावी रैली में फडणवीस को 'नागपुर का देश को उपहार' बताया था, जो उनके फडणवीस में विश्वास को दर्शाता था। हालांकि मोदी ने 2014 के लोकसभा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में धुआंधार प्रचार अभियान चलाया था, लेकिन चुनावों में पार्टी की अभूतपूर्व जीत का कुछ श्रेय तत्कालीन प्रदेश भाजपा अध्यक्ष फडणवीस को भी गया था।

जनसंघ और बाद में भाजपा के नेता रहे गंगाधर फडणवीस के पुत्र देवेंद्र ने युवावस्था में राजनीति में कदम रखा और 1989 में आरएसएस की छात्र शाखा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में शामिल हुए। पूर्व भाजपा अध्यक्ष नितिन गडकरी दिवंगत गंगाधर को अपना 'राजनीतिक गुरु' कहते हैं। देवेंद्र फडणवीस 22 वर्ष की आयु में नागपुर नगर निगम के पार्षद बने तथा 1997 में 27 वर्ष की आयु में इसके सबसे युवा महापौर बने।

फडणवीस ने अपना पहला विधानसभा चुनाव 1999 में लड़ा और जीत हासिल की। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और लगातार तीन विधानसभा चुनाव जीते। पिछले महीने हुए चुनाव में उन्होंने अपनी नागपुर दक्षिण पश्चिम सीट बरकरार रखी। महाराष्ट्र के राजनीतिक परिदृश्य में कई नेताओं के विपरीत, फडणवीस पर कभी भ्रष्टाचार का आरोप नहीं लगा है। महाराष्ट्र के सबसे मुखर राजनेताओं में से एक फडणवीस को कथित सिंचाई घोटाले को लेकर तत्कालीन कांग्रेस-राकांपा सरकार को मुश्किल में डालने का श्रेय भी दिया जाता है।

फडणवीस को 2019 के विधानसभा चुनाव में तब झटका लगा जब अविभाज्य शिवसेना के नेता उद्धव ठाकरे ने मुख्यमंत्री पद को लेकर चुनाव पूर्व गठबंधन से हाथ खींच लिया और भाजपा नेता का ''मैं वापस आऊंगा'' उद्घोष अधूरा रह गया। फडणवीस ने 23 नवंबर, 2019 को दूसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली और उनके साथ अजित पवार ने उपमुख्यमंत्री पद संभाला।

अपनी संस्कृति को लेकर भारतवंशियों के उत्साह से अभिभूत हूं : मैथिली ठाकुर

मेलबर्न/भाषा। आस्ट्रेलिया में पहली बार कार्यक्रम पेश करने वाली लोक गायिका मैथिली ठाकुर अपने कार्यक्रम में उमड़ी भीड़ को देखकर हैरान रह गईं और उन्होंने कहा कि विदेशों में अपनी संस्कृति को लेकर भारतवंशियों का उत्साह उनके आत्मविश्वास को दोगुना कर देता है ।

बिहार के मधुबनी की रहने वाली मैथिली ने यहां के व्यस्त फेडरेशन स्क्वेयर पर 'आलवेज लाइव' संस्था के एक कार्यक्रम में विभिन्न भारतीय भाषाओं में गीत सुनाये और हजारों की संख्या में उमड़े प्रशंसक उनके गीतों पर झूमे।

दुनिया भर में परफार्म करने वाली मैथिली का आस्ट्रेलिया में यह पहला कार्यक्रम था । उन्होंने यहां भारतीय वाणिज्य दूतावास में भाषा को दिये इंटरव्यू में कहा ,''मैं जहां भी जाती हूं, भारतीय संगीत का प्रतिनिधित्व करती हूं। मेलबर्न के फेडरेशन स्क्वेयर पर भारत की विभिन्न भाषाओं और भजन, सूफी जैसी अलग अलग शैलियों में गाया। मैंने सोचा नहीं था कि मेलबर्न में इतनी संख्या में लोग सुनने के लिये आयेंगे । ''

छह वर्ष की उम्र से अपने दादा और पिता से मैथिली लोक संगीत, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, हारमोनियम और तबले की तालीम लेने वाली चौबीस वर्षीय इस कलाकार ने कहा ,''जब मैं भारतवंशियों से भारत के बाहर मिलती हूं तो अपनी संस्कृति को लेकर उनके भीतर अधिक उत्साह देखने को मिलता है। बिल्कुल वैसा ही है कि जब घर से दूर होते हैं तो घर की याद ज्यादा आती है । यहां मुझे सुनने के लिये बिहार, गुजरात, उत्तराखंड, हिमाचल पदेश, महाराष्ट्र सभी राज्यों के लोग थे और मैंने सभी भाषाओं में गाया । ''

संगीत के प्रति अपने रुझान के बारे में पूछने पर उन्होंने कहा कि बचपन से वह लोक गायिका शारदा सिन्हा को सुनती आई हैं जिनका उन पर प्रभाव रहा है । उन्होंने कहा,'' मैं शारदा जी से ज्यादा मिली तो नहीं हूं लेकिन लोकगीत बचपन से सुन रही हूं। मेरे पापा चाहते थे कि मैं अच्छा संगीत सुनूं और यह क्रम शारदा जी के गीतों से ही शुरू हुआ। छठ पूजा का तो पर्यायवाची शारदाजी का नाम है क्योंकि उनके गीतों से ही छठ शुरू होती है और खत्म होती है।''

मैथिली ने कहा ,''बिहार में महिला सशक्तिकरण की बात करें तो शारदाजी एक मिसाल हैं।''

शारदा सिन्हा का पिछले महीने ही निधन हुआ है । मैथिली का मानना है कि लोक संगीत को सहेजने और उसके प्रचार के लिये सामूहिक प्रयास करने जरूरी हैं । उन्होंने कहा ,''सामूहिक प्रयास करें तो लोकगीतों का प्रसार तेजी से होगा। मैंने जब शुरू किया था तो मेरे पास कोई रोल मॉडल नहीं था कि उसी की तरह काम करना है।

फिल्म 'गर्ल्स विल बी गर्ल्स' प्राइम वीडियो पर 18 को होगी स्ट्रीम

मुंबई/एजेन्सी

ऋचा चड्ढा और अली फजल की फिल्म गर्ल्स विल बी गर्ल्स प्राइम वीडियो पर 18 दिसंबर को स्ट्रीम होगी। प्राइम वीडियो ने अपनी आने वाली फिल्म गर्ल्स विल बी गर्ल्स की एक्सक्लूसिव स्ट्रीमिंग प्रीमियर का ऐलान किया है।

यह एक इंडो-फ्रेंच जॉइंट प्रोडक्शन है और एक बहुत ही सराही गई यंग अडल्ट ड्रामा है। इसे पुशिंग बटन स्टूडियो, डोल्से वीटा फिल्म्स और क्रॉलिन एंगल फिल्म्स के तहत ऋचा चड्ढा, क्लेयर चासग्ने और शुचि तलाती ने प्रोड्यूस किया है, जबकि अली फज़ल इसके एग्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर हैं। फिल्म गर्ल्स विल बी गर्ल्स ,ऋचा चड्ढा और अली फज़ल के पुशिंग बटन स्टूडियो का पहला प्रोडक्शन है। यह लेखक शुचि तलाती की डायरेक्टोरियल डेब्यू भी है और इसमें प्रीति पाणिग्राही और केसव बिनॉय किरॉन मुख्य भूमिकाओं में डेब्यू कर रहे हैं, जबकि मशहूर अभिनेत्री कानी कुसरुटी महत्वपूर्ण भूमिका में हैं। इस फिल्म ने कई इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में अवॉर्ड्स जीते हैं। गर्ल्स विल बी गर्ल्स 18 दिसंबर को प्राइम वीडियो पर भारत में एक्सक्लूसिव रूप से प्रीमियर होगी।

प्राइम वीडियो की कंटेंट लाइसेंसिंग डायरेक्टर मनीष मेघानी ने कहा,प्राइम वीडियो पर हम हमेशा ऐसी अलग और अनोखी कहानियां लाने के लिए कमिटेड है, जो न सिर्फ दर्शकों का मनोरंजन करें, बल्कि उन्हें सोचने पर भी मजबूर करें और विचारपूर्ण बातचीत को बढ़ावा दें।यह एक ऐसी फिल्म है जो युवाओं के सामने आने वाली अनोखी समस्याओं, खोजों और जटिलताओं को दिखाती है, और गर्ल्स विल बी गर्ल्स एक बेहतरीन फिल्म है जिसे देखना वाकई दिलचस्प है।

यह फिल्म दुनिया भर में आइकॉनिक फिल्म फेस्टिवल्स में सराही गई है, और हमें खुशी है कि हम इसे प्राइम वीडियो पर हमारे दर्शकों के लिए लॉन्च कर रहे हैं। इस फिल्म का हमारे लिए एक खास मतलब है क्योंकि यह पुशिंग बटन स्टूडियो का डेब्यू प्रोडक्शन है, जिसे अभिनेता-जोड़ी रिचा चड्ढा और अली फज़ल ने स्थापित किया है, जिन्होंने हमारी कई सफल भारतीय ओरिजिनल्स में काम किया है।

'ये रिश्ता क्या कहलाता है' में आएगा नया ट्विस्ट : समृद्धि शुक्ला

मुंबई/एजेन्सी

स्टार प्लस के शो ये रिश्ता क्या कहलाता है की अभिनेत्री समृद्धि शुक्ला ने कहा कि शो में एक नया ट्विस्ट आने वाला है। समृद्धि शुक्ला और रोहित पुरोहित ये रिश्ता क्या कहलाता है की विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। शो में समृद्धि शुक्ला (अभिरा), रोहित पुरोहित (अर्मान), और गर्विता साधवानी (रुहि) मुख्य भूमिकाओं में हैं। ये रिश्ता क्या कहलाता है की कहानी फिलहाल अभिरा, अर्मान और उनके दक्ष के माता-पिता बनाने के इमोशनल सफर पर केंद्रित है। हाल ही में, मेकर्स ने एक दिलचस्प प्रोमो शेयर किया है, जिसमें आगे आने वाले हाई-स्टेक ड्रामा की तरफ इशारा किया गया है। प्रोमो में पोद्दार फैमिली में बच्चे के लिए होने वाली रस्मों की झलक दिख रही है, लेकिन जब अभिर (अभिरा का खोया हुआ भाई) वापस आता है, तब अभिरा और अर्मान की ज़िंदगी में और मुश्किलें आ जाती हैं। अभिर को बच्चे को मां के पास देने के लिए कहा जाता है, लेकिन वो दक्ष को अभिरा के बजाय रुही को दे देता है। टूटे हुए दिल के साथ अभिरा अर्मान से सच्चाई जानने की कोशिश करती है। ऐसे में अब दर्शकों को एक इमोशनल और थ्रिलिंग सफर देखने मिलने वाला है, क्योंकि अभिरा, अर्मान और रुही की ज़िंदगी में बड़ा मोड़ आने वाला है।

अभिरा का किरदार निभाने वाली समृद्धि शुक्ला ने कहा, नए प्रोमो में शो में एक बड़ा मोड़, एक नया ट्विस्ट दिखाया गया है। ये एक छिपी हुई सच्चाई सामने लाता है, जो अभिरा अपने बच्चे के बारे में नहीं जानती थी। अब जब अभिरा को पता चलता है कि अर्मान को इस सच्चाई का पता था, तो वो अपनी शादी पर सवाल उठाने लगती है, ये जाने बिना कि उसका बच्चा मर चुका है और उसे ये यकीन दिलवाया गया है कि बच्चा जिंदा है। इस सच्चाई ने अभिरा को तोड़ दिया है, और वो गहरे इमोशनल दर्द से गुजर रही है। अब ये देखना दिलचस्प होगा कि वो इस पर कैसे रिएक्ट करती है, इसका अर्मान के साथ उसके रिश्ते पर क्या असर पड़ता है, और इन अनचाहे हालातों की वजह से पोद्दार फैमिली के साथ उसके रिश्ते में कैसे बदलाव आता है। शो का यह एपिसोड आठ दिसंबर को रात 9.30 बजे स्टार प्लस पर प्रसारित किया जायेगा। 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' राजन शाही द्वारा निर्मित है और स्टार प्लस पर सोमवार से रविवार रात 9:30 बजे प्रसारित होता है।

अभिनेत्री तमन्ना भाटिया और भूमि पेडनेकर बुधवारको मुंबई के फिल्मसिटी में देखी गईं।

एकता कपूर पहुंची पुरी, भगवान जगन्नाथ के किए दर्शन

मुंबई/एजेन्सी

बॉलीवुड फिल्मकार एकता कपूर जगन्नाथ पुरी पहुंचीं ,जहां उन्होंने भगवान जगन्नाथ का दर्शन किया। 'द साबरमती रिपोर्ट' की निर्माता एकता कपूर जगन्नाथ पुरी पहुंचीं और भगवान जगन्नाथ के दर्शन-पूजन किए। इसके बाद एकता कपूर ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया। एकता कपूर ने कैप्शन में लिखा, जगन्नाथ पुरी, जय गोविंदा। वीडियो में कपूर मंदिर के शिखर के सामने हाथ जोड़े खड़ी नजर आ रहीं। एकता कपूर के साथ वीडियो में फिल्म निर्माता अंशुल मोहन भी नजर आये। एकता कपूर अपनी हालिया रिलीज 'द साबरमती रिपोर्ट' को देश भर में मिल रही सकारात्मक प्रतिक्रिया से बेहद खुश हैं। इस फिल्म को देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह के साथ ही राजनीतिक जगत की अन्य कई दिग्गज हस्तियों की ओर से तारीफें मिल चुकी हैं। गुजरात के गोधरा कांड पर बनी विक्रांत मैसी, राशि खन्ना, रिद्धि डोगरा स्टारर फिल्म 'द साबरमती रिपोर्ट' को देश भर के कई राज्यों में टैक्स फ्री भी कर दिया गया है।

फ़िल्म 'कन्यादान 2' और 'पैसे वाली बहू' की शूटिंग एक साथ शुरू

मुंबई/एजेन्सी

फ़िल्म निर्माता एवं वर्ल्डवाइड रिकॉर्ड्स म्यूजिक कंपनी के एमडी रत्नाकर कुमार की दो फ़िल्म 'कन्यादान 2' और 'पैसे वाली बहू' की शूटिंग एक साथ शुरू हो गयी है। 'कन्यादान 2' और 'पैसे वाली बहू' की शूटिंग एक ही दिन उत्तर प्रदेश में शुभ मुहूर्त करके शुरू की गई है। दोनों फिल्मों की मेकिंग और शूटिंग बिग लेबल पर की जा रही है। वर्ल्डवाइड रिकॉर्ड्स लिमिटेड, रत्नाकर कुमार और जितेंद्र गुलाटी प्रस्तुत वर्ल्डवाइड रिकॉर्ड्स लिमिटेड बैनर के तले भोजपुरी फ़िल्म 'कन्यादान 2' का निर्माण किया जा रहा है। इस फ़िल्म के निर्माता रत्नाकर कुमार हैं। सह-निर्मात्री निवेदिता कुमार हैं। इस फ़िल्म के निर्देशन की बागडोर सुशील कुमार उपाध्याय ने संभाली है। इस फ़िल्म के मुख्य कलाकार सुशील सिंह, माही श्रीवास्तव, मणि भट्टाचार्य, तनु श्री, श्वेता वर्मा, अनिल रस्तोगी, संदीप यादव, धर्मेंद्र सिंह हैं। डीओपी अशोक कुमार पांडा, लेखक धर्मेन्द्र सिंह, संगीतकर ओम झा हैं। इस फ़िल्म की शूटिंग उत्तर प्रदेश की पावन नगरी वाराणसी के विभिन्न क्षेत्रों में की जा रही है।

वहीं भोजपुरी फिल्म 'पैसे वाली बहू' की शूटिंग उत्तर प्रदेश के जिला जौनपुर के विभिन्न क्षेत्रों में की जा रही है। वर्ल्डवाइड रिकॉर्ड्स लिमिटेड, रत्नाकर कुमार और जितेंद्र गुलाटी प्रस्तुत वर्ल्डवाइड रिकॉर्ड्स लिमिटेड बैनर के तले बन रही इस फ़िल्म के निर्माता रत्नाकर कुमार हैं।

सह-निर्मात्री निवेदिता कुमार हैं।अजय कुमार इस फ़िल्म का निर्देशन कर रहे हैं। इस फिल्म के मुख्य कलाकार संचिता बनर्जी, जय यादव, काजल त्रिपाठी, शुभ किशन शुक्ला, खुशी यादव हैं। डीओपी शत्रुघ्न तिवारी, लेखक मनोज प्रसाद, संगीतकार राजेश कुमार झा हैं।

रत्नाकर कुमार ने कहा कि 'फ़िल्म 'कन्यादान 2' की स्टोरी इतनी मार्मिक और हृदयस्पर्शी है कि जब भी यह फ़िल्म सिनेमाघरों में और टीवी चैनल पर रिलीज की जाएगी तो हर ऑडियंस इस फिल्म को अपने आप से जोड़कर देखेगी। उन्होंने बताया कि 'फ़िल्म 'पैसे वाली बहू' ऑडियंस का मनोरंजन करने के साथ ही समाज में मैसेज भी देगी।

इन दोनों फिल्मों की कहानी जब मेरे पास आई तो उनका सब्जेक्ट मुझे बहुत अच्छा लगा। इसलिए मैंने एक साथ फ़िल्म की शूटिंग शुरू करने का निर्णय लिया, ताकि दोनों फिल्में जल्द से जल्द दर्शकों के प्रदर्शित की जायें। फिल्मों की स्टारकास्ट अलग-अलग है और दोनों फिल्मों के निर्देशक भी अलग हैं, जो अलग-अलग यूनिट के शूटिंग कर रहे हैं।

बुक माई शो पर पुष्पा 2: द रूल ने बनाया नया रिकॉर्ड, एडवांस में बिके 1 मिलियन टिकट्स

मुंबई/एजेन्सी

अल्लू अर्जुन की मच अवेटेड फिल्म पुष्पा 2: द रूल 5 दिसंबर को रिलीज हो रही है। दर्शकों के साथ ट्रेड एक्सपर्ट्स की नजरें भी मूवी के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन पर हैं।

अब दावा किया जा रहा है कि पुष्पा 2 बुक माई शो पर सबसे तेजी से 1 मिलियन टिकट्स बेचने वाली फिल्म बन गई है। इस मामले में मूवी ने कल्कि 2898 एडी,बाहुबली 2 और केजीएफ चैप्टर 2 को पीछे कर दिया है। पुष्पा 2 की रिलीज के पहले इसकी अडवांस बुकिंग से जुड़े कई आंकड़े सामने आ रहे हैं।

अब बुक माई शो की एक प्रेस रिलीज के मुताबिक, फिल्म की प्री-रिलीज सेल ने रिकॉर्ड्स तोड़ दिए हैं। बुक माई शो पर इसके 10 लाख टिकट बिक चुके हैं। बुक माई शो के सीओओ आशीष सक्सेना ने बताया, 'सारे रिकॉर्ड्स तोड़ते हुए पुष्पा 2 द रूल 1 मिलियन टिकट की बिक्री को क्रॉस कर चुकी है। इसने कल्कि 2898 एडी, बाहुबली2: द कन्क्लूजन और केजीएफ चैप्टर 2 को पीछे छोड़ दिया है।'

आशीष ने बताया, 'हैदराबाद, बेंगलुरु, मुंबई, दिल्ली-एनसीआर से लेकर पूरे देश में फैन्स बुक माई शो पर टिकट बुक करने के लिए टूट पड़े हैं। उम्मीद लगाई जा रही है कि पुष्पा 2 नॉर्थ और साउथ दोनों मार्केट्स में ऑल टाइम ग्रॉसर साबित होगी। साउथ में अल्लू अर्जुन का तगड़ा फैनबेस है और पहले पार्ट को ही देखने काफी भीड़ जुटी थी।

रश्मिका मंदाना और फहाद फासिल के परफॉर्मेंस और टैलेंट ने भी सीक्वल को मजबूती दी है। फिल्म की ओपनिंग और वीकेंड कलेक्शन इस साल के रिकॉर्ड्स तोड़ सकती है।'

राज कपूर की अमर जादूगरी : सौ साल बाद भी शो जारी

मुंबई/एजेन्सी

लेजेंड्री राज कपूर की 100वीं जयंती पर आरके फिल्म्स, फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन, एनएफडीसी, एनएफएआई एंड सिनेमाज साथ मिलकर एक उत्सव का आयोजन कर रहे हैं। इसका शीर्षक 'राज कपूर 100 - सेलिब्रेटिंग द सेंटेनरी ऑफ द ग्रेटेस्ट शोमैन' है। यह तीन दिवसीय उत्सव 13 दिसंबर को शुरू होगा और 15 दिसंबर तक जारी रहेगा। इसके अंतर्गत 40 शहरों और 135 सिनेमाघरों में राज कपूर की 10 फिल्में प्रदर्शित की जाएंगी। स्क्रीनिंग पीवीआर-इनॉक्स और सिनेपोलिस सिनेमाघरों में होगी, ताकि दर्शकों को यह सुनिश्चित हो सके कि देश भर में अत्याधुनिक स्थानों पर इस ट्रिब्यूट का अनुभव कर सकते हैं। खास बात यह है कि हर सिनेमा घर में टिकट की कीमत मात्र छ100 रखी गई है, ताकि हर कोई इस जादुई सफर का हिस्सा बन सके। राज कपूर (19241988) भारतीय सिनेमा के सबसे बड़े फिल्म निर्माताओं में से एक माने जाते हैं, जिन्होंने विश्व सिनेमा पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। द ग्रेटेस्ट शोमैन के नाम से मशहूर राज कपूर ने फिल्म निर्माण, अभिनय और निर्देशन में ऐसा अद्भुत काम किया, जो आज भी प्रेरणा देता है। अपने पिता पृथ्वीराज कपूर के कदमों पर चलते हुए राज कपूर ने अपनी अलग पहचान बनाई।

उन्होंने इंकलाब (1935) में एक बाल कलाकार के रूप में काम किया। इसके बाद 1948 में उन्होंने आर.के. फिल्म्स स्टूडियो

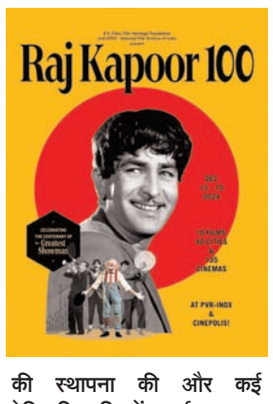

की स्थापना की और कई ऐतिहासिक फिल्में बनाई।

उनकी फिल्मों में आज़ादी के बाद के भारत के आम आदमी के सपने, गांव और शहर के बीच का संघर्ष और भावनात्मक कहानियां जीवंत हो उठती थीं। आवारा (1951), श्री 420 (1955), संगम (1964) और मेरा नाम जोकर (1970) जैसी फिल्में आज भी सिनेमा प्रेमियों के दिलों में बसी हुई हैं। उनका प्रसिद्ध किरदार, चार्ली चैपलिन से प्रेरित एक 'आवारा', दुनिया भर में लोकप्रिय हुआ, खासकर सोवियत संघ में। राज कपूर को पद्म भूषण (1971), दादासाहेब फाल्के पुरस्कार (1988) और कई फिल्मफेयर पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। आवारा और बूट पॉलिश जैसी उनकी फिल्में कांस फिल्म फेस्टिवल में भी शामिल हुईं, और जागते रहो ने कार्लोवी वैरी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में क्रिस्टल ग्लोब जीता।

अभिनेता और फिल्म निर्माता रणधीर कपूर का मानना है कि , राज कपूर सिर्फ एक फिल्म निर्माता नहीं थे, वे एक दूरदर्शी थे, जिन्होंने भारतीय सिनेमा की भावनात्मक परंपरा को आकार दिया। उनकी कहानियां केवल फिल्में नहीं, बल्कि भावनात्मक यात्राएं हैं जो पीढ़ियों को जोड़ती हैं। यह उत्सव उनकी दृष्टि को हमारा छोटा सा ट्रिब्यूट है।

रणबीर कपूर, अभिनेता , हमें बहुत गर्व है कि हम राज कपूर परिवार के सदस्य हैं । हमारी पीढ़ी एक ऐसे दिग्गज के कंधों पर खड़ी है, जिनकी फिल्मों ने अपने समय की भावनाओ को दर्शाया और दशकों तक आम आदमी को आवाज दी। उनकी टाइमलेस कहानियाँ प्रेरणा देती रहती हैं, और यह फेस्टिवल उस जादू का सम्मान करने और सभी को बड़े पर्दे पर उनकी विरासत का अनुभव करने के लिए आमंत्रित करने का हमारा एक तरीका है।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
www.dakshinbharat.com
epaper.dakshinbharat.com
चेन्नई | गुरुवार | 05-12-2024 /dakshinbharat /dakshinbharat DAKSHIN BHARAT RASHTRAMAT HINDI DAILY
RNI No. : TNHIN/2013/52520
Regn No. : TN/CCN/613/2014-2016
posted at Patrika Channel,
Egmore RMS, Chennai-8

सूर्य का प्रकाश संपूर्ण संसार के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि सूर्य जगाता है। आज के दिन कई लोग सोये रहते हैं लेकिन यह सक्रियता का संदेश देने वाला है। जो सक्रिय होता है उसे ऊर्जा प्रदान करने वाला है। जिसका रवि तेजस्वी है, वह सफलता प्राप्त करता है। सबके लिए उसकी उपस्थिति विशेष प्रकार के प्रभाव से भर देती है। जो पितृ भक्त होता है, उसका सूर्यबल बढ़ता है। जहां- जहां पिता का सम्मान है, वहां आपका भी सम्मान बढेगा। यह बड़ों की विश्वसनीयता का प्रतीक है।

बीजेएस के राष्ट्रीय अधिवेशन में बीजेएस तमिलनाडु टीम ने रचा इतिहास

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। पूना में आयोजित भारतीय जैन संघटना (बीजेएस) के 8 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में बीजेएस तमिलनाडु ने इतिहास रचा है। इस अधिवेशन में तमिलनाडु के विभिन्न भागों से जैन समाज के 92 विशिष्ट कार्यकर्ताओं ने अपनी सहभागिता दर्ज की। देश भर से सुसंस्कृत व्यक्ति, सुदृढ़ कुटुंब, सक्षम समाज और समर्थ राष्ट्रनिर्माण की परिकल्पना पर आधारित इस अधिवेशन में सम्पूर्ण भारत से जैन समाज के निःस्वार्थ सेवा प्रदान करने वाले लगभग तीन हजार कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र में बीजेएस तमिलनाडु के भाई बहनों द्वारा तमिलनाडु की संस्कृति पर आधारित वेशभूषा ने वहां उपस्थित सभी का मन मोह लिया। बीजेएस के कार्यों को जन जन तक पहुंचाकर जैन समाज और राष्ट्र निर्माण में कार्यरत राज्यों एवं कार्यकर्ताओं को उनके द्वारा संपादित कार्यों के आधार पर मूल्यांकन करते हुए अलग अलग 12 वर्गों में पुरस्कार प्रदान किये गए। जिसमें से बीजेएस तमिलनाडु को 3 कैटेगिरी में सर्वोत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया एवं अन्य 2 केटेगरी में भी नामांकित किया गया।

बीजेएस तमिलनाडु द्वारा तमिलनाडु में 95 केरल में 2 और पॉन्डिचेरी में 2 चैप्टर कुल 99 चैप्टर बनाकर नेटवर्क डेवलोपमेन्ट के लिए पूरे भारतवर्ष में सर्वोत्तम राज्य का पुरस्कार प्रदान किया गया। तमिलनाडु के कोयम्बटूर चैप्टर को उनके द्वारा किये गए कार्यों के लिए सम्पूर्ण भारत के सर्वक्षेष्ठ चैप्टर का पुरस्कार प्रदान किया गया। बीजेएस के राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत राज्यों के राज्याध्यक्षों में तमिलनाडु के राज्याध्यक्ष रमेश पटावरी को सर्वश्रेष्ठ राज्याध्यक्ष के रूप में पुरुस्कार प्रदान किया गया।

तमिलनाडु में पानी संरक्षण के लिए तालाबों के पुनरुद्धार कार्य को देखते हुए पानी फाउंडेशन के मुखिया भारत के परफेक्शनिस्ट अभिनेता आमिर खान के कर कमलों से इस कार्य को संपादित करने वाले चैप्टर्स व राज्य को पुरस्कार प्रदान किया गया। विशेष गौरव के क्षण तमिलनाडु के राजेन्द्र लुंकड़ को बीजेएस रत्न के सम्मान से सम्मानित किया गया। बीजेएस के नव मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष नंदकिशोर सांखला ने राष्ट्रीय टीम में ज्ञानचंद आंचलिया को राष्ट्रीय प्रमुख(साधु साध्वी समन्वय) एवं बीजेएस तमिलनाडु के निवर्तमान राज्याध्यक्ष रमेश पटावरी को पूर्वोत्तर राज्यों में संघठन को मजबूत करने हेतु ईस्ट जोन राष्ट्रीय प्रमुख की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी प्रदान की।

तमिलनाडु के नव मनोनीत राज्याध्यक्ष कमल किशोर तातेड़ एवं राज्य महासचिव राजेश पोकरना को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। इस अधिवेशन के उपरांत जैन समाज एवं जैन समाज के माध्यम से राष्ट्र निर्माण के अति महत्वपूर्ण एवं जरूरी 50 से ऊपर कार्यक्रम जल्दी ही बीजेएस के बारकेट से तमिलनाडु में प्रारंभ होंगे। इस अधिवेशन में सम्पूर्ण देश एवं विदेश से जैन समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों के साथ राजनीति एवं समाज सेवा से जुड़े हुए विशिष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति एवं उनके विचारों ने सभी को प्रेरणा प्रदान की एवं उत्साहवर्धन किया। जिसमें प्रमुख रूप से पानी फाउंडेशन के प्रमुख आमिर खान, महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फड़नविस, एनसीपी(शरद) प्रमुख शरद पवार, केंद्रीय सिविल एविएशन व कोऑपरेसन राज्यमंत्री मुरलीधर मोहोल, जीतो अपैक्स के राष्ट्रीय अध्यक्ष विकास भण्डारी, लोकमत मीडिया समूह चेयरमैन व सकल जैन समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय दर्डा, जैन यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर चैनराज जैन, इनाम ग्रुप के चेयरमैन वल्लभ भंसाली, गणपतराज चौधरी, राजेश मेहता चेयरमैन बीसीएम ग्रुप आदि उपस्थित रहें।

गेलडा गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल ने मनाया वार्षिक उत्सव

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां साहुकारपेट स्थित गणेश बाई गेलडा जैन गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल में 64वां वार्षिक उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में चेयरमैन भगवान महावीर आई हॉस्पिटल के नरेन्द्र मरलेचा उपस्थित थे। एसएस जैन महिला विद्या संघ एवं स्कूल द्वारा मुख्य अतिथि का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए इक्कीस हजार रुपए का चेक स्कूल को प्रदान किया गया। संघ के अध्यक्ष रिखबचन्द लोढ़ा, संघ के उपाध्यक्षा कमला मेहता, संघ के महासचिव ललेश कांकरिया, स्कूल की अध्यक्षा प्रमिला दुगड़, स्कूल की सचिव एवं संचालक प्रमिला लोढ़ा, स्कूल के कोषाध्यक्ष महेंद्र कुंकुलोल, स्कूल की प्रधानाचार्य आर निशा सहित कार्यकारणी समिति के सदस्य, स्कूल की अध्यापिकाएं एवं छात्राएं उपस्थित थे। जो छात्राएं सर्वोच्च अंक से परीक्षा में उत्तीर्ण हुई उनका सम्मान किया गया। छात्राओं के द्वारा राजस्थानी, मारवाडी, गुजराती नृत्य नाटिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

अन्नानगर के अग्रवाल भवन में श्रीमद् भागवत कथा 19 से

26 दिसम्बर से होगा तीन दिवसीय 'नानी बाई का मायरा'

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां के अन्नानगर के शांति कॉलोनी में स्थित एसआरकेके अग्रवाल सभा भवन में 19 दिसंबर से सामूहिक संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा एवं नानी बाई का मायरो का आयोजन किया जा रहा है। श्रीमद् भागवत कथा के प्रमुख आयोजक मोहनलाल सर्राफ ने बताया है कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रीमद्भागवत कथा में मथुरा वृंदावन से आने वाले भगवताचार्य प्रियाशरणजी महाराज कथा व्यासपीठ पर विराजमान होकर रोजाना शाम 4 बजे से श्रद्धालुओं को कथा का श्रवण करवाएंगे। कथा के प्रथम दिन कलश यात्रा का आयोजन श्याम मंदिर अन्ना नगर से किया जाएगा। दूसरे दिन मंगलाचरण, सुखदेव जन्मोत्सव, परीक्षित जन्म, सुखदेव पूजन,

तीसरे दिन सृष्टि विस्तार, कपिल भगवान चरित्र, राधा उत्सव, चौथे दिन प्रहलाद चरित्र,वामन अवतार, श्रीराम चरित्र, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, पांचवें दिन श्री कृष्णबाल लीला, माखन चोरी, गोवर्धन पूजा एवं छप्पन भोग अर्पण, छठवें दिन श्री कृष्ण मथुरा गमन, कंस वध, रुक्मणी विवाह तथा आखिरी दिन सुदामा चरित्र, परीक्षित मोक्ष श्री शुकदेव की विदाई एवं फूलों की होली खेली जाएगी।

सर्राफ ने बताया कि कथा संपन्न होने के उपरांत अगले दिन 26 दिसंबर से नानी बाई का मायरा कार्यक्रम का भी आयोजन होगा शिवाकिशोरीजी कथा श्रवण कराएंगी। पहले दिननरसी जी के जन्म की कथा, दूसरे दिन आमंत्रण प्राप्त करना तथा नरसी जी द्वारा कृष्ण की प्रार्थना प्रसंग व आखिरी दिननरसी जी का अंजार शहर में आगमन की कथा सुनाई जाएगी। 29 दिसंबर को पूर्णाहुति एवं भंडारे का आयोजन किया जाएगा। इस आयोजन द्वय को लेकर मोहनलाल सर्राफ अपनी टीम प्रकाश अग्रवाल, अरविंद कुमार सिंघल, विनोद गर्ग, राजेंद्र कुमार गुप्ता, नवीन अग्रवाल, रोहित शशि गोयल तथा सोनू सर्राफ के साथ तैयारी में लगे हुए हैं।

पुष्पांजलि

बुधवार को कारवार नौसेना बेस मेमोरियल पर पुष्पांजलि अर्पित करके उन बहादुर सैनिकों को राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इन बहादुर सैनिकों ने 1961 में अंजादीप द्वीप को पुर्तगालियों से मुक्त कराया था। इस मौके पर रियर एडमिरल केएम रामकृष्णन वीएसएम मौजूद थे।

शिक्षक आनंदन की सेवानिवृति पर उनके योगदान को किया याद

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। शहर के एजी जैन हायर सेकेंडरी स्कूल में हिंदी प्रवक्ता जी. आनंदन के सेवानिवृत्ति समारोह का आयोजन हुआ। आनंदन ने हिंदी प्रवक्ता के रूप में अपनी गौरवशाली सेवा यात्रा का अंत कर मंगलवार को विद्यालय से विदाई ली। आनंदन ने विद्यालय में लगभग चार दशकों तक छात्रों के भीतर सृजन और संवेदनशीलता की भावना जागृत की। उनकी कक्षाएँ केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं थीं, वे विचारों, चिंतन और जीवन मूल्यों का संगम थीं। छात्रों को काव्य, निबंध और साहित्य के अनमोल रत्नों से परिचित कराने में उन्होंने अपनी अद्वितीय शैली का परिचय दिया। इस अवसर पर विद्यालय के पत्राचारक गौतमचंद गोठी, सचिव दलजीतसिंह ढढा, प्रबंध समिति सदस्य गौतमचंद बोहरा एवं श्री प्रसन्नचंद चोरड़िया उपस्थित थे। गोठी एवं ढढा ने आनंदन के कृतित्व एवं व्यक्तित्व की सराहना की। आनंदन ने विदाई के अवसर पर कहा, शिक्षा का कार्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का निर्माण करना है। मेरे छात्रों ने मुझे भी सिखाया और मैं सदा उनका आभारी रहूँगा। कार्यक्रम का संचालन भास्करन एवं धन्यवाद ज्ञापन वर्धमान द्वारा किया गया।

यतनाल बाहरी नहीं हैं, कर्नाटक भाजपा में सभी मुद्दे बातचीत से हल होने की उम्मीद : येडीयुरप्पा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

शिव्वमोग्गा। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता बी. एस. येडीयुरप्पा ने बुधवार को कहा कि बीजापुर के विधायक एवं उनके आलोचक बसनगौड़ा पाटिल यतनाल बाहरी व्यक्ति नहीं हैं।

उन्होंने उम्मीद जताई कि सभी आंतरिक मुद्दे बातचीत के माध्यम से सुलझा लिए जाएंगे। यतनाल पार्टी के राज्य नेतृत्व की भी खुलकर आलोचना करते रहे हैं।

येडीयुरप्पा ने यह भी कहा कि वह और उनके बेटे भाजपा की राज्य इकाई के प्रमुख विजयेंद्र येडीयुरप्पा पार्टी को मजबूत करने के लिए सभी को साथ लेकर चलना चाहते हैं। पूर्व मुख्यमंत्री ने एक सवाल के जवाब में कहा, बातचीत होनी चाहिए, यतनाल कोई बाहरी व्यक्ति नहीं हैं, हो सकता है कि कुछ कारणों से वह नाराज हों। मेरी अपेक्षा है कि सभी को साथ लेकर चलना चाहिए, यही विजयेंद्र की भी अपेक्षा है...।

यतनाल ने विजयेंद्र की खुलकर आलोचना की है और उन पर सत्तारूढ़ कांग्रेस के साथ मिलीभगत की राजनीति करने का आरोप लगाया है। उन्होंने विजयेंद्र और येडीयुरप्पा पर पार्टी को अपने कब्जे में रखने की कोशिश करने का भी आरोप लगाया है।

आत्मा का सच्चा सुख संयम में निहित : मुमुक्षु

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर प्रवास पर आए मुमुक्षु अक्षय मालू और मुस्कान धारीवाल ने अपने सम्मान के मौके पर कहा कि आत्मा का सच्चा सुख तो संयम में ही है। आत्मा के शाश्वत सुख की प्राप्ति हेतु हमें संयम चारित्र ग्रहण करना ही होगा। बिना चारित्र के आत्मा की मुक्ति असंभव है। जितनी छोटी आयु में हम दीक्षा ग्रहण करेंगे उतना ही अधिक समय हमें आत्मा की साधना हेतु प्राप्त होगा।

मुमुक्षुओं ने यह विचार डाकलिया निवास पर प्रस्तुत किए। संघ के ललित डाकलिया ने कहा कि सौभाग्य से ही मुमुक्षुओं का गृह आंगन में पदार्पण होता है। राकेश डाकलिया, ललित डाकलिया, नवजीवन बोहरा, संतोष डाकलिया, चन्द्रकला, कोमल आदि ने मुमुक्षुओं सम्मान किया। इस अवसर पर मुमुक्षु जीनल मरडिया भी उपस्थित थीं।

उधवुम ननबर्गल विद्यालय में करुणा क्लुब का हुआ शुभारंभ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। करुणा इंटरनेशनल चेन्नई केंद्र द्वारा पालवेडु के अलथुर ग्राम में उधवुम ननबर्गल नर्सरी और प्राइमरी स्कूल में करुणा क्लब का बुधवार को शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चेन्नई केंद्र के सचिव ज्ञानचंद कोठारी व विशेष अतिथि लेडीज सेन्टर की अध्यक्षा निर्मला छल्लाणी उपस्थित हुए। विद्यालय प्रबंधन समिति द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया। विद्यालय के पत्राचारक टीआर सारथी ने सभी का स्वागत किया। मुख्य अतिथि सचिव ज्ञानचंद कोठारी ने भाषण में कहा कि सच्ची करुणा इस मान्यता से उत्पन्न होती है कि सभी जीवन एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। करुणा का अभ्यास करके, हम दुख को कम करते हैं, दया दिखाते हैं और सदभावना में निहित दुनिया का पोषण करते हैं।

विशेष अतिथि निर्मला छल्लाणी ने संबोधित करते हुए कहा कि करुणा और जीव दया मानवता का सार है। विद्यार्थी एन. पवित्रा, एम. प्रियदर्शिनी, एच. देवकी को अलथुर करुणा क्लब का पदाधिकारी नियुक्त किया गया। प्रिंसिपल पी. सुप्रिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। अतिथि द्वारा विद्यालय प्रांगण में पौधारोपण किया गया। अंत में सभी को करुणा प्रतिज्ञा करवाई गई।

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरामय्या बुधवार को मांड्या जिले के के.आर. पेट हेलीपैड पर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए।

सहयोग दक्षिण भारत राष्ट्रमत

बेंगलूरु के श्रीनगर में जनमन कन्नड़ संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित मारुति मेडिकल के प्रमुख महेन्द्र मुणोत ने विद्यादान अभियान के तहत विद्यार्थियों को शिक्षण सामग्री वितरित की। आयोजकों ने मुणोत का सम्मान किया।

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006.
Regn No. RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520 **Editor : Bhupendra Kumar** (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar.
Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any such manner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.